

ॐ

श्री ज्ञानवल्लभ पुष्पमाला का पुष्प-६

श्रीमद् दवन्द्रसरिजी महाराज कुंत
श्रीगुरुवदन भाष्य और पञ्चान्वाण भाष्य
का
हिन्दी अनुवाद
कृता

श्री प्रतापमल्लेनी सेठिया मीरसाँर

स्वर्तर गन्धीय शासन नायक गंगाधीरवर श्रीमर् मुगसगारजी म
के वर्तमान पट्टघर प्रगर वक्ता वीरपूय श्रीमार् आनदसागरसूरीरवरजी
म सा कि आजनुयायिनी श्रीमनि शिवश्रीजी म कि शिष्या विदुषी प्र
श्री वल्लभश्रीजी महाराज सा के उपदेश से ।

प्रसिद्ध कृता

श्रीजिनदत्तसूरि सेयासघ

द्वय सहायक

जीवरराजजी मीश्रीलालजी नाहटा राहदा (५ -लानदश)
(स्वर्गस्थ घोसालालजी के स्मरणार्थे)

प्रकाशक —

प्रतापमल सेठिया

मन्त्री, श्रीबिन्दनपुर रोड,

३८, मारवाडी बाजार, बरह २.

मुद्रक —

जे. एल्. घन

धर्मपुर वैभव

गिरगाव, बम्

यत्रैकता तत्रैव शान्ति

अस्मिन् जगति सर्वे मानवा शान्तिमिच्छन्ति पर सा कथं
लभ्यते तद्विषयकं त्वभ्यानामेष दृश्यते इति तु सुनिश्चितमेव
यद्दशान्तिं दुःखरूपा केवलम् तत्र शांतेरभिलाषा स्यात्तद्विषये
यत्र शान्तिसाम्राज्यं वर्तते तत्र सर्वमपि सुखमयमेव कतिपये
जना निरर्थक वितण्डावादं कुर्यन्ते तत्परिणामस्तु अशान्तावेवा
गच्छन्ति इत्यस्माद्धेतो निरर्थको विवादो वर्ज्य एव जना
स्वसमयमवश्यमेव पालयन्तु तत्र तु नैव मतद्वयम् पर सामान्य
वस्तु ये जना बहुदूरमाशङ्कन्ति तदेव क्लेशम्याशान्तेषु
कारणं भवति ये जना विशालदृष्टया भवेयुस्तेषां भवेत्तु
अनेकान्तमादृष्टया सर्वमपि स्वीकार्यमिति ये जना सिद्धान्त
धादिन स्युः तदा शान्तिमूलं निर्मूलमेव भवेदिति पुनश्च सर्वत्र
शान्तिमुच्चं करामलकवद् सुलभं भवेद्



आमुख

ज्ञानक्रिया भ्या मोक्ष — कहा गया है कि ज्ञान महित जा त्रिया कि जाय वही मोक्ष फल का देने वाली है । बिना ज्ञान कि त्रिया काय क्लेश व पौद्गलिक सुगतकही सिमित है । आचार्य म श्री दवेन्द्र मुरिजीने दैनिक काय में आनवाली, देवेवदा, गुरु वदन और पञ्चलाग कि त्रिधी समझाने के लिये तीनोंही भाष्य प्रकाशित कर जैन समाज पर उपकार किया है, उगता गुजराती भाषा में कितनेही स्थाना मे अनुवाद हो चुका है परन्तु हिन्दी भाषी भाइ-जाँ केलिये आवश्यक समझकर पूजनीय प्रवर्तनि जी श्री वल्लभ श्री जी म कि आशा शिरोधार्यकर इन तीना भाष्या का हिन्दी अनुवाद मैने किया है । जिसमें चैत्य वदन भाष्य का अनुवाद तो प्रथम प्रकाशित हा चुका है यह दोन्ही भाष्य अब प्रकाशित हाने जा रहे है । प्रेस कि अमुनिषा के कारण दोना भाष्यो को पृथक पृथक प्रेसों म छपाने पडे जिनमें गुरु वदन भाष्य में तो प्रेस के कारण अत्यन्त कष्ट उठाया पडा व बहुत ही अगुदियां रहा इस केलिये पाठक क्षमा करे ।

गुरु वदन कि त्रिधी समझाने सक्षेप में गुहना स्वरूप भी समझ लिया जाय तो जादा अच्छा होगा अत संज्ञेय में गुरु का स्वरूप लिखता हूँ । (गु) अघात-अंधकार (द) अघान नाश करनेवाले मननर मिथ्यातवरूपी अधकार को नष्ट करने में जो साहयक हो बोहि गुरु ह । यरहारी कि दृष्टिमें चोरी हिंसा, माया, कपट आदि जो सिनाने बोभी गुरुही हा सकता है पर वह दुगुरु के लक्षण है सुगुरु वाही हो सनता है जो (१) कंचन कामिनी का त्यागी हा (२) समाज पर व किसी पर मार रूप न हो (३) श्रेयमान माया लोभादि, दुगुणों से वंचित हो (४) अहिंसा सत्य और अदैत्य का पालन जिनके जीना के सुय अग हो । इन वार्ता के पालन करने के लिये उहे अनेक प्रकारके कितनेही नियमो का पालन करना पडता है जो कई पृथक पुस्तकों में प्रकाशित ह अत यहाँ लिखकर खेत गाना नहीं चाहता

उपर जो संज्ञेयमें गुण बताये उन करके युक्त हो वह सधा गुरु है उसकि भक्ती व वंदन हमे ज्ञान प्राप्त करवाकर मोक्ष फलके देनेका बहुत बडा आल

न है अतः इस भाष्य में लिखी निषिद्ध वंदन करने का म पाठना में सानुग्रह निवेदन करता हूँ ।

इस भाष्य के अनुवाद में प्र ४ में जो धोम वंदन कि विधी बताई है उसके मुलगाथा में 'दंसणीय' शब्द है । और उसका अर्थ में साधु साध्वी दोनो लिखा है । फिरभी किसी २ अनुवाद में इसका अर्थ शीक साधु कर के साध्वीश्री म को वंदन के लिये भाविना को ही बताया है । यह बहुत विचार नीय है । साध्वी जी म पाच माहत्रतो कि धारक है । वरके भायक तो अणुवर्ता के धारक भी है या नही, ऐसी स्थिति में वंदन नही करनेका कहना वहाँ तक युक्ति संयुक्त होगा । उसका पाठक निष्कण्ठा से स्वयं सोच ले !

पञ्चराग के विषय में इतना ही निवेदन है के मच्छ भेदता के कारण इन म कितनेही स्थानोंपर भिन्नता नजर आती है । अतः विनासु हो, वो इसका नोराकरण स्वयं करले और 'मेरा सो सखा' को त्याग कर 'सखा सो मेरा' इस निति को अपनाये । इस प्रकार कि नितीहि हमें इच्छल फल (मोक्ष) को दनेवासी है ।

रघु मेरक

प्रतापमल सेठिया

आचार्यब्रह्मचारिणी विदुषी शासनभूषणा प्रवर्तिनीजी
वल्लभभीजी म सा वा स्तुतिरूप अष्टक

हरिगीत

रचयिता मायजी दामजी शाह

इस भूमिपर विख्यात राजस्थान नामक देश है,
राणा प्रताप समान नृप का जन्म से सुविशय है ।
यहीं गांव लोहावट समा है लोहसम दृढता धरे ।
इस गांव में यजुशर्ह निज भवतार को धारण करें ॥ १ ॥

इनका पिता का नाम सूरजमल्लजी से विख्यात था
माताजी गोगाबाई का यश विश्व में प्रख्यात था ।
गुरुणाजी श्री शिवश्री समीप दीक्षा प्रहीली आपने,
यजुशर्ह में से आप बहनमध्री रूपे सखर बने ॥ २ ॥

जब पञ्च वय की उम्र थी तब धर्मपथ में चल रही
सिद्धि अपूर्ण रही गयी थी योग साधन की सही ।
इस जन्म में परिपूर्णता को प्राप्त करना पा चुकी,
ससार का निस्तार करने की घडी भी आ चुकी ॥ ३ ॥

दश वय की लघु उम्र में दीक्षा प्रहीली आपने,
लघुवय तथापि ज्ञानसागर पार कीना आपने ।
है आपका वैदुष्य अद्भूत सबदशानमय मति,
वैसी ही गुरुभक्ति परायणता तुम्हारी बिलसती ॥ ४ ॥

है आप में अतिनम्रता समता मुशीलता सबदा,
सुसयम आराधना की उद्योत जलती है सदा ।
है आप में किष्काकिनोद निज प्रकृति में शाहता,
प्रतिममय होती पठन-पाठन कायरेत सुविनीतता ॥ ५ ॥

है आप सरठर गच्छ में तेनस्विता अति तौरसे
 अतिप्रियता मिली जैन से जैनेतों की भौरमे ।
 मुस्लीम अपसर आपका उपदेश पर अति मुग्ध था
 निज गांव में हिंसा शिकार सदैव करना था ॥ ६ ॥

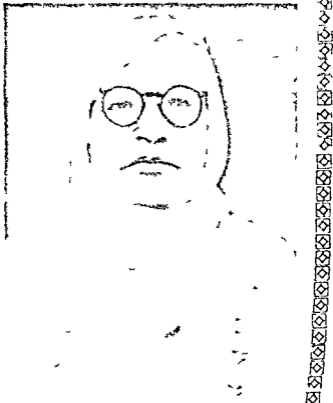
कै भद्रिों की जोर्णता भीन्वायी निज उपदेश से
 कै गांव में शाजा बनो है आपके प्रतिबोध स ।
 जिनदत्तसूरि की उदरी है अनेक दादावाडियों,
 पुरधार्यकर कर आपने जिनधमका रुका दिया ॥ ७ ॥

जन कोइ परिषय आपका करके कभी भूल नहीं,
 है आप में अद्भूत शक्ति आप भी भूले नहीं ।
 है सर्वदा हसता ही चहरा सब समय में आपका,
 है धय जीवन आपका विरकाल जय हो आपका ॥ ८ ॥



श्रीवाच प्रवचनरिणी त्रिदुर्गा वृन्दा प्रवर्तिनी
 बल्लभश्रीजी महाराज साहब

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय



वयस

दिना

प्रवर्तनपद

३१-१-१९९५

दि १९९५-माघशुक्ल

दि १९९५-आश्विन

वृत्त- -

शुक्ल - -

शुक्ला वृत्तिमा

महाराज (गुरुदेव)

साहब (वृन्दावती)

दुर्गावती (महा)

श्री गुरु वंदन भाष्य

अर्थ सहित

मंगलाचरणा

गुरु वन्दनमह तिबिद्, तफिद्दा छोम शरमावत्त
सिर नमणा इसु पढम पुण्ण-समाममण दुगि-नीये ॥१॥

गुरु वन्दन—गुरु वन्दन
अह—अह
तिबिद्—तीन प्रकार से
न—वो
फिद्दा—फेटा वन्दन
छोम—छोम वन्दन
वारसवत्त—छादण वत्त

सिर नमणाइसु—मस्तक नम
नादि से
पढम—पहेला
पुण्ण—पूरे,
समाममण—समासमण से,
दुगि—दो,
वीये—दुमरा

अर्थ

अथ गुरु वन्दन तीन प्रकार से बहते हैं— फेटा वन्दन
छोम वन्दन और छादणवत्त वन्दन। मस्तकनमाना उगैरा (दोनों
हाथ जोड़ना) से पहेला फेटा वन्दन होता है। पूरे दो समासमणों
केपर दुमरा। छोम वन्दन होता है।

दो समय बंदना करने का कारण

बहूद्यू रायाण, नमिउरुज निवेइउपन्दा,
विसजिनया विमदिश्र, गच्छइ अमेव इत्यदुग ॥२॥

पह—जैसे
द्यू—दूत
रायाण—राजा को
नमिउ—नमस्कार
करु—काय का
निवेइउ—निवेदन कर क
पन्दा—पीछे से

वीममजिनयोधि—विसजन
(समाप्त) दानेपर भा
यदिग—यथा वरुष
गच्छइ—जाता है
एमेव—इस प्रकार म
इत्य—यदा पर भी
दुगम्—गे

अर्थ

जैसे दूत राजा को नमस्कार करके अपने कार्य को निवेदन करके पीछे से काय समाप्त होने पर भी बंदना करके जाता है, इसी प्रकार से यदा पर भी दो वक्त बंदना समझना ।

विवेधन—जैसे दूत पुरुष जब आता है, तब राजा का नमस्कार करके अपने कार्य को निवेदन करके राजा से पाठा जाने की आज्ञा पाकर भी फिर बंदना करके जाता है इसी तरह यदा (श्रीम धन्दन और द्वादश वत बंदन) दो वक्त करना । द्वादश वत में तो दो वक्त बंदना देने से २५ आयश्यक होते हैं ।

गुरुमहाराज को वंदना करने का कारण

आयरस्स समूल विष्णुश्चो, सोगुणवश्चो अपडिवती
सायविहि-वन्दनाश्चो, विहि इमो वारसा वत्ते ॥३॥

आयरस्स—आचार वा
(धर्म का)

उ—फिर (ही)

मूल—मूल

विष्णुश्चो—विनय

सो—सो

गुणवश्चो—ज्ञानवस्तु की

पडिवती—मेधा भक्ति

सा—सो

विहि—विधि से

वन्दनाश्चो—वन्दन करने का

विही—विधि

इमो—वह

वारसावत्ते—द्वादशवत्

वन्दन में

अर्थ

आचार (धर्म) का मूल ही विनय है, जो विनय (गुण
सयुक्त) गुणवान गुरु की सेवा रूप है। जो सेवा विधि से
वन्दन करने से होती है। वह विधि द्वादश वत्त वन्दन में
कहेंगे।

द्वादश वत्त वन्दन कैसे होता है और तीनों वन्दन किसका
होता है।

तदयत्तु लदग दुगे, तस्य मिहो आइम सयल मघे
 धीय तु द-मणीगय, पय द्विथाण चनइयतु ॥४॥

तदयत्—तीसरा
 तु—किर
 दृ दण दुगे—दो वन्दना म
 तस्य—उसम
 मिहो—परस्पर
 आइम—पहेला

सयलसन्धे—मयमघमें
 धीय—दूमरा
 दन्मणीण—माधुप्रों को
 पयद्विआणम्—पदधी धारी ग
 तदय—तीसरा
 तु—किर

अर्थ

तीसरा हाइशारन किर दो वन्दना दो सं राना है । उस
 में पहेला केरा वदन नो परस्पर सय सत्र में होता है । दूसरा
 शोभ वन्दन साथ माधुप्रों को राना है । और तीसरा (हाइ
 शारन वन्दन) आचार्यदिपदीधारी को राना है ।

विवेचन- सुमाधु के पाठ में—(१) गच्छगण (गच्छ की
 मर्वादा की रक्षा करे) २ अनुयोगी (गच्छ का अभ्योजन करे)
 ३ अनियतगता (जिसा प्रकार का रुकावट के बिना विचरे
 ४ गुरुसेवी (गुरु की सेवा करे, आज्ञा मान) ५ गायुक्त
 (मयम मार्ग में माधुधान)

वन्दना क पाव नाम थीर उसका थाशदक निर्युक्ति व
 रुदा हुआ वर्णन -

वदण चिड किडकम्म, पूआरम्म च विणय कम्म च
 कापव्य रस्य व केण भावि भादेव कइ सुत्तो ॥५॥
 कइ शोणाय कडसिर कइदिव आरस्सथेहि परिमुद्ध
 कइ दोम विण्य मुक्क किड कम्म कीम किरइवा ॥६॥

वदण—वन्दन कर्म
 चि—चिति कर्म
 किडकम्म—वृत्तिकर्म
 पूआरम्म—पूजा कर्म
 विणय कम्म—विनय कर्म
 कापव्य—करना
 कस्स—किसे
 व—अथवा
 केण—किसने
 भा वि—अथवा
 भादेव—किस समय
 कइ सुत्तो—कितने उक्त
 कइ शोणाय—कितना अग्रजत

कइ सिर—कितनी उक्तमस्तक
 कइ हि—या कितने
 आरस्स थेही—आरथ्यको
 द्वारा
 परि मुद्ध—शुद्ध
 कइ दोम—कितना दोषोंद्वारा
 विण्य मुक्क—रहित
 किड कम्म—वृत्ति कर्म
 (वन्दन)
 कीम—किसी
 किरइ—किया जाता है
 वा—अथवा

अर्थ

१ वन्दन कर्म, २ चितिकर्म, ३ वृत्तिकर्म, ४ पूजाकर्म
 ५ विनय कर्म। ये पांच किम को करना ? (आचार्यादि को)
 कौन करे ? (सब) करे करे ? (शान ह्या तब) कितनी उक्त करे ?
 (२ वक्त) कितना अग्रजत शिष्य का प्रमाण (दो) कितनी बार
 मस्तक नमावे ? (४बार) कितने आरथ्यक से शुद्धकिया जाना

हे १ (२२) कितने शेषों से रहित किया जाता है १ (३२) प्रति
 कर्म क्यों किया जाता है १ (निर्जंगा क हेतु)

ब-दा के २२ द्वा

पण नाम पणाहरणा, अजुग्गपण जुग्गपण चउअदया
 चउदाय पणनिसेहा, चउअणिमेह अटकारणय ॥७॥
 आवम्पय मुहणतय, तग्गुपह पणीच्च दातवतीमा
 उग्गुण मुसुवण दुग्गह दुग्गीमअरर गुरुपणीसा ॥८॥
 पयअडव न उग्गणा अग्गुसुवणणा आमायण तित्तिमम्
 उविती उवीम तग्गेहि चउमया पाणुड इग्गणा ॥९॥

पण नाम—१ नाम
 पणाहरणा—२ दृष्टान्त
 अजुग्ग पण—३ अयोग्य
 जुग्ग पण—४ योग्य
 चउअदया—५ अदाता
 चउदाय—६ दाता
 पणनिसेहा—७ अज्ञान पर
 निषेध
 चउ अणि मेह— ८ अज्ञान
 अतिषेध
 अटकारणय—९ कारण
 आवम्पय—आवश्यक

मुहणतय—मुहणति
 तग्गुपेह—शरीर की पाइले
 रणा
 पणाअ—२४
 दोस धनासा—२० शेष
 उग्गुण— गुण
 गुग्ग ट ल—गुग्गस्यापना
 दुग्गह—० अदग्रह
 दुग्गीसअरर—२२६ अरर
 गुरुपणीसा—२५ जोड़ावर
 पयअडव न—१० पद

उडाणा—, स्नानक (शाय
का)

समुद्र दयणा—गुरु क १
यवन

आसाण—आशातना

तित्तिम्मम्—२३

दुग्धी—२ प्रकार की विधि

शीम—२२

गाहि—द्वारों में

वसुधावत्—६८

दग्—भेद

अर्थ

१ -न्दनाके ५ नाम, पाँच स्नान (पास्तादि)स्योप्य
प न / आचार्यादि पाँच योग्य ५ चार स्नाना चारदाना
आणा क देनगले ७ पाँच स्नान से-वदरा-या निषेध = चार
स्नान से-वाँदणा अनिषेध २१ २ना दग् क = कारण, ०
= / आशय्यक ११ मुहपत्ति का / पानिहना १- शुभ्र का
२५ पडिलेहणा १३, २० दोर १०१ इन में होन चाने ६ मुह
१५ गुरु स्थापना १६ २० प्रकार का अग्रह १, २-न्दना क
= ६ अक्षर उत म ५ उडाणा १- / १० प १६ शिष्य को
पूछने योग्य ६ स्नान २० गुरु क ६ यवन २१, ३ आशातना
२० दो प्रकार की दग् न विधि। स प्रकार = द्वारों में ६८६
उत्तर भेद होत हैं।

वाचना क ५ नाम का पहला द्वा

वदण्य चिद्वग्म निद्वग्म विण्यक्मम पूर्यग्म

गुरु व दणा पणनादा इव भावे दुहा इव

यन्त्रकर्म—१ इन कर्म
 त्रिकर्म—त्रिति कर्म
 त्रिद्विकर्म—द्विति कर्म
 त्रिगणकर्म—विनयकर्म
 पूजकर्म—पूजा कर्म

गुणदत्त—गुण दत्ता के
 पणनामा—१ नाम
 दध्वेभावे—द्रव्य और भाव
 दुता—२ प्रकार से
 गोहेण—मामा य मे

अर्थ

१ यन्त्रकर्म ह्युक्ति करना २ त्रिति कर्म गजोहरग्यादि
 रत्नने की त्रिति में चतुर ३ त्रिद्विकर्म दो उदना देना ४ त्रि
 नयकर्म गुरु कर्मा ५ विनय करना याने अशुभल प्रवृत्ति रचना
 ६ पूजा कर्म मंत्र उचन और कावा का अर्घ्य यन्त्रमाय गुण
 उदना दे ७ नाम द्रव्य और भाव इस तरह दो प्रकार से
 सामा य मे है ।

द्विवेदा—मिथ्या रष्टि और उद्योग रहित जो यन्त्र
 ता वा द्रव्य यन्त्र और उद्योग सहित मन्त्रगु रष्टि का
 यन्त्र को सात यन्त्र

यन्त्रकर्म का ५ स्थान का दूसरा द्वार

मीपलय गुड्डु गीर, कण्ठ सेवगटु पाल ए मय
 पन्ने ये दिद्विना किडकम्पे २३ भावेदि ॥१॥

शायलय—सातलाशाय
 गुरु द्रव्य—सुखवाशाय
 धार कण्ठ—गीरा सातलाशाय
 और दृष्ण

सेवग—२ (राजा २) दा
 सेवक
 पाल ओ सेवे—पालक और
 शाय

पंच—पाप
 ओं ओं—ये
 सिद्धता—दृष्टान्त

द्विरकर्म्ये—कृतिकर्म से
 दृश्यभावेति—द्रव्य और भाव
 म
 अर्थ

१ शीतलाचार्य २ कुलकाचार्य ३ धीराशास्त्री और
 कृष्ण ४ (राजा का) दो सेवक ५ पालक और शास्त्र यह पांच
 दृष्टान्त कृति कर्म (बाँदणा) के विषे दृश्य और भाव से सम
 भना ।

प्रथम चदन कर्म पर शीतलाचार्य का दृष्टान्त

विवेचन— हस्तिनापुर नगर में बसन्तिह राजा क
 र्मोभाग्यदत्तरी नाम का राजा के शीतल नाम का पुत्र था
 और भृ गारमन्तरी नाम की पुत्री थी, वो कचनपुर के विजय
 सेन राजा की परणार्ह अनुक्रमसे शीतलपुत्र राजा हुआ । उसने
 धर्मशेष सूर्यावर से उद्देश्य सुन चैराग्यवान ही दीक्षा
 ग्रहण की । बादमें गुरुके पास सिद्धा-नादि पदकर गीताथ
 होकर आचार्य पद प्राप्त किया । भृ गारमन्तरी के चारनिपुण
 पुत्र हुए थे उनके सम्मुख उनकीमाता हमेशा अपने भाई की
 प्रशंसा करे कि 'घन्य है तुम्हारे मामा को जिसने राज ऋद्धि
 लोड कर दीक्षा ली' हम कारण से वो चार भाई भी चैराग्य
 पाकर गुरु के पास लोड लेकर अनुक्रम से गानार्थ हुवे चार
 शीतला चार्य के समाप के नगर में पत्रों सुनकर गुरुको
 पूछ कर उनका चदना करन गय सूर्यास्त का समय होवने
 से वो चारों माधु नगर के बाहर एक मन्दिर में
 समय बटने और किसी भाषक से अपने जाने का

आचार्य को कहलाया गया। जो शुभ ध्यान के प्रताप से गुरु केवल ज्ञान प्राप्त हुआ। प्रभात होने पर उनका आना जानकर शीललाचार्य स्वयं उन साधुओं से मिलने को मामने आया। यहाँ पर रात्रा को जो उनको केवल ज्ञान प्राप्त हुआ उसका उन आचार्य को मालूम नहीं था जो कथला साधु आचार्य का घटनादि नहीं करने में आचार्य के मर्म मोघ 'हरान हान से उरटे दो उनको ज्ञान करने लगे तब केवली साधुओं ने कहा कि तुम कथाय स भगकर यह द्रव्य रहन करने हा मो उचित नहीं है येशात मुनकर आचार्य ने पूछा कि आप यह बात किस प्रकार जानकर कहत हा ? तब केवली साधुमान कहा कि 'केवल ज्ञान' मे । एसा मुनकर आचार्य एकदम सभ्रमित हाकर कहन लगे कि हा इतिगद मन केवल जाना साधुओं की आशानन करा । ये मेग दाप मिष्ट्या हा । एसा कह कर केवलमाना साधुओं का भाउ घदन किया । समन चौथे केवली को घ दन करत स्वयम् को भा केवल जानशान हुआ ।

दमग विरि कर्म पर सुल्लक आचार्य का दृष्टान

एक आचार्य महाराजन अपने एक छोटे शिष्य को अच्छे गुण लक्षण से युक्त जानकर अपने आत समधर्म उसकी आचार्य पर गी दी। ये सुल्लक (दोग) आचार्य गाना मुन के पास शास्त्रा का अध्ययन करत हैं । वा मुनि भा उन आचार्य का बहुत मान रखते ह । तामी एकदम मोहनाय फम के प्रबल उदय से वा छोटे आचार्य परिणामों मे गिर गये इसलिये जब दूसरे साधु भिक्षादि के लिये उपाधय क बाहर गये थे तब वो यहाँ से निकल गये । गहन

म जाने जगलर्म चतुस्रें उत्तम बुधाके होत हुए एक गृहस्थ
 को शर्मा वृक्ष (खेजडा) को पूजता देख कर आचार्य ने उसका
 सच्चा कारण पूछा तब उस गृहस्थने कहा कि हमारा पूर्वज
 हमेशा सब इसको पूजते आये हैं इसलिये मैं भी पूजता हूँ
 यह बात सुनकर आचार्य चकित होकर विचारने लगे कि
 मैं भी इस शर्मा वृक्ष जैसा गुणहीन हूँ पर मैं सिर्फ रत्नो
 हरणादिक द्रव्य चित्ति कम गुण के कारण बहुत से गुणा जन
 मरेको पूजते मानत हूँ। एसा विचार कर वहाँसे ही पीछे
 आकर गीताथ साधु के पास अपने दोष (पाप) का आलोचना
 नोंद करके मयम माग में उच्यल हुआ। य भाव रिति
 कर्म हुआ समझना।

तीसरा कृतिर्म पर गीग सालवी और कृष्ण का दृष्य

एक एक आनमिता र भगवान परिवारमहित द्वारिका
 नगरा में पधारे तब कृष्ण वासुदेव ने सब साधुओं को बड़े
 उल्लसित भाव से (द्वादशार्जने) उन्नत किया यह भाव पूर्ति
 कर्म समझना लेकिन गीग सालवी न ता सिफ कृष्ण प्रम न
 रग्यन के हेतु साधुओं को द्रव्य उन्नत किया जो द्रव्य उन्नतर्म
 समझना।

चौथा पना र्म उपर दो सुवर्णो का दृष्यत

एक राजा के दो सेवक अपने गाव का सीमा के लिये
 भगडा हाने स अपने अपने कर्तव्य पूर्ण करन को गाव माग म
 जान रे इनने में एक उत्तम अणुगार (निर्गम्य साधु) सामन
 मिले, तब मस पर "साधो दृष्टे धृग मिड"

यानं माधु क देखने से निश्चय बायकी सिद्धि होती है
 ऐसे मौंगलिक वचन कहता हुआ मुनि को प्रेम भक्ति से
 प्रणाम किया। यह भाव पूजा कर्म और दूसरे सेवक ने हँसी
 के साथ सिर्फ व्यंग्यार रुढ़ि को मान देकर प्रणाम किया यो
 द्रव्य पूजाकर्म जानना। बाद में राज दरबार में राजा के पास
 जाने पर पहले संवक का लय और दूसरे का परानय हुआ।

पाँचवाँ विनय कर्म पर पालक और शांभु का दृष्टा

एक समय श्रीनेमिनाथ भगवान द्वारिका में पधारने
 तक धी दृष्टा ने कहा कि जो कोई सबसे पहिले जाकर प्रभु
 को वन्दना करेगा उसे मैं मेरा यह नुरग (शश्व रत्न) इनाम
 दूंगा। इस बात को सुनकर अश्वरत्न के लोभ से पालक जो
 अमध्य था, उसने सबसे पहले रात्रिमें ही जाकर प्रभु को
 वन्दन किया। यह द्रव्य विनय कर्म समझना। और साँव
 कुमारने जो अपने स्थान में रहतेहुए ही भाव से वन्दन किया
 यह भाव विनय कर्म समझना। यह पाँच दृष्टात का दूसरा
 द्वार हुआ।

पासत्थादिक पाँच अवन्दनीय का
 तमिरा द्वार

वामत्यो शोभना, कुर्मात ममत्तया अदा चन्द्रा ।

दुग दुग निदुगणोपविदा, अयत्तणिज्जा विणामयभि ॥१०॥

पास्त्यो—ज्ञानादि का लाभ
 न लेने वाला
 ओसतो—क्रिया में शिथिल
 (कमजोर)
 दुशील—ज्ञान दर्शन और
 चारित्र्यकी विराधना
 करने वाला
 संसत्तो—जिमके साथ

रहे वैसा हो जावे
 अहाछदो—स्वेच्छाचारी
 दुग दुग—दो, दो
 त्रिदुग—तीन दो
 अनेगविहा—अनेक प्रकारके
 अन्दगिज्जा—बदना करने
 योग्य नहीं
 जिणमयमि—जैन शासन में

अर्थ

१ ज्ञानादि पास में रखता हुआ भी जिसका लाभ नले, २ साधु के आचार पालने की क्रिया में शिथिल (कमजोर) ३ ज्ञान दर्शन चारित्र्य की विराधना करने वाला ४ जिस क संग में रहे वैसा होजावे ५ अपनी इच्छानुसार (स्वच्छाचारी) चलने वाला (अनुक्रम से) दो, दो, तीन, दो और अनेक प्रकार के यह पांच जैन शासन में बदना करने योग्य नहीं है

विवेचन—पहला पास्त्यो ज्ञानादि पास में रखते हुए उसका लाभ नहीं लेवे उसको दो भेद । १ देश पास्त्यो और २ मत्र पास्त्यो उसमें जो अकारण शक्यातर (ग्राम के मालिक का) पिंड अभ्याहन (सामने लाया हुआ) पिंड राज्य पिंड (राजा के घर का आहार) नित्य पिंड (जिसने कहा हो की हमशा आना में इतना दू गा पेसा निमन्त्रण किया हो उसके घर का आहार) अन्नपिंड (बिना कारण अच्छा रस वाला आहारलेना) इसप्रकार दोपवाला आहारले चारित्र्य का गव करे, उन्हे देश पास्त्यो समझना ।
 चारित्र्य के साथ पास में रखने हुए भी

उपयोग नहीं करे सिर्फ बेशकी विडम्बना करे, गृहस्थ बनकर
 रहे उसका सब पामत्यो समझना। दूसरा श्रोमन्नो आचार
 पालने में शिथिल उनके दो भेद, देश श्रोमन्नो और मर्य श्रो
 मन्नो 'इच्छा मिच्छादि' दश प्रकार की साधु समाचारी में
 प्रायः अवेक्षणकरे वो देश अयमन्न। अतुर्मान् यिना पाटपाटले
 आदि काममें लगे, बिछे हुए विस्तर पर सोता रहे, आलस
 के आधीन होकर समय को निमाल्य जैसा करे वो मर्य अय
 मन्न। तीसरा पुशील तीन प्रकार-के हैं १ ज्ञानपुशील,
 २ दशन पुशील, ३ चारित्र पुशील, समय, यिनय, आदिरादि
 जो ज्ञान के आचार है उनसे रहित (विपरीत) ज्ञान को पढ़े
 और पढ़े हुए ज्ञान का अपनी इच्छा से ऊँचा अर्थ करे वो
 ज्ञान पुशील। शका करनादि पूरी इच्छा वाले से मित्रता
 रखे, यिना कारण उनके साथ बातचीत करे वो दशन पुशील
 मत्र जग्रादि साधुमार्ग में दोष उपजाने वाले पाप के काम करे
 करावे, वो चारित्र कुशील। चौथा ससक्त उसके दो भेद
 १ सक्लिष्ट चित्त और असक्लिष्ट चित्त ससक्त उत्तम
 जीव हिंसादि आश्रयों का सेवन करे, दूसरों के गुण को सद्गुण
 न करसके और तीनगारथ का सेवन करेथो सक्लिष्ट चित्तसे
 ससक्त, और जैसा मौका हो वैसा (नीयू के पानी की तरह
 उसी रूप में होना) हो जाय जैसे अच्छे ज्ञानवान के साथ
 से सद्व्यवहार करे और अनाचार के साथमें उसीके माफिक
 दुर्गुणी होजाये। २ यथाद्गदा मन में जैसा आवे वैसा उत्सु
 भाषण करे घर्माचार्य की आशातना करे अपना स्वार्थ छिद्र
 हो वैसी बान करे, स्वयं सासार में डूबे और शरण जाने वाले
 को भी डूबाये।

पाँच वन्दन करने योग्य का चौथा द्वार

११) आयसि उवज्जाए पवत्ति येरे तहेव रायसिओ ।

किङ्कम्म निज्जरट्टा, कायव्व मिमेसि पचएह ॥१३॥

आयसि—आचार्य
उवज्जाओ—उपाध्याय
पवत्ति—प्रवर्तक
येरे—स्थविर
तहेव—उत्तम प्रकार
रायसिओ—रत्नाधिक

किङ्कम्म—प्रतिकर्म
निज्जरट्टा—निजरा के वास्ते
कायव्व—करना
मिमेसि—ये
पचएह—पाँच को

अर्थ ॥

१ आचार्य २ उपाध्याय ३ प्रवर्तक ४ स्थविर वैभेटी
५ रत्नाधिक (ज्ञानादि गुण से उत्तम) इन पाँच को निजरा
के वास्ते वन्दन कर्म करना ।

विशेष—आचार्य—छत्तीस गुण समुक्त, मूत्र ग्रन्थ के
जाणने वाले, नामादि पाँच आचार्यों को पालन कर और
करावे २ उपाध्याय—११ अंग, १२ उपाग, १३ विनिर्ग्री और
करण सिद्धि। एसे पचीस (२५) गुण समुक्त अपना वडा मया
ना से अग्निात शिष्य को भी सूत्र पढ़ावे। ३ प्रवर्तक—एक
सयम आदि अन्धे योगों में साधु मनुदाय को अन्धे अन्धे
उचित सम्भाल रखे। ४ स्थविर—वाग्भि में दार्ढ्या (अन्धे
मगान वाले) साधु को इस लोक और परलोक

देकर चारित्र्य माग में स्थिर करे उसक ३ भेद है । १ ययस्थविर
 २ पर्यायस्थविर ३ ज्ञानस्थविर । ययस्थविर—६० वर्ष जितने
 वृद्ध जो हो । पर्यायस्थविर—जिसके २० वर्ष की दीर्घ रोग
 हो । ज्ञानस्थविर—उत्कृष्ट से महानिरीथादि छ मंत्र के जानने
 वाले और जयय से समयायोगादि मंत्र के जानने वाले ।
 ५ रत्नाधिक—अवस्था में बड़ा या छोटा हो परन्तु ज्ञानादि
 गुणों में बहुत बढ़ होया गच्छ के हितके लिये अपने से जो बन
 सके वो पुनर्गर्भ करे वो गणवच्छेदक ।

पांचमो बंदगा के अदात और छद्दा बंदगाकेदात के दोनो द्वार

माय विश्र जिह्र भाया,ओमा वि त हेव सव्वरायणिश्च ।
 किडकम्म न कारिज्जा,चउममणाइ कुण्णतिपुणो ॥ १४ ॥

माय—माता
 विश्र—पिता
 जिह्रभाया—बड़ाभाई
 ओमावि—छोटा होने परभी
 तहेय—इसीतरह
 सव्वरायणिश्च—सब रत्ना
 धिय का

विईकम्म—बदन कर्म
 नकारिज्जा—नहीं करना
 चउममणाइ साधु आदिचारों
 कुण्णति—कर
 पुणो—कर

अर्थ

१ माता = पिता ३ बड़ाभाई इसा तरह ४ उमरमें छोटे होने हुए भी सब रत्नाधिकों स बदन नहीं करना फिर

साधु कौरा चारों यत्न कर्म करे ।

विवेचन—गृहस्थ भा पाप से तो पदना करावे,

पाच स्थान मे बान्दणा नहीं देने का सातमा द्वार

विस्मिन्न परादुत्ते अपमत्ते मा कयाड वदिब्जा ।

अहार नीहार, कुणमाणे काउ-कामेन ॥१५॥

विकृति—व्यग्रचित्त वाला
परादुत्ते—परागमुरवाला
पमत्ते—प्रमाद वाले को
कयाड—कभीभी
माउन्दिब्जा—वन्दन नहीं
करना

आहार—आहार
निहार—लघुनीति यहीनीति
कुणमाणे—करते हो
काउकामे—करने की इच्छा
वाले को

अर्थ

१ धर्म में जिस का चित्त व्यग्र हो । २ परागमुर (जो सन मुग नहीं बैठे हों) । ३ प्रमाद वाले को । ४ आहार और ५ निहार (लघु नाति या बड़ा नीति) करते हों या करने की इच्छा वाले हो उनको कभी यत्न नहीं करना ।

चार स्थान पर वादणा देने का आठवाँ द्वार

पमते आसणत्येश उयसन, उवद्विश्रे ।

अणुन्नवित्तु मेहावी, क्रिडकम्म पउउड ॥१६॥

पमते—गानि चित्त वाले
आसणत्ये—आसन पर बैठे
हुए

उयमने—क्रोधादि से रहित
उवद्विश्रे—त पर तैयार
अणुन्नवित्तु—आशा लेकर

फिर
मेदाचि—बुद्धिमान

किङ्कर्म—वादणम्
पउजइ—प्रवर्ते

अर्थ

१ अयग्र (शास) चित्तवाले २ आसन पर बैठे हुये
३ क्रोधादि से रहित ४ छद्म इत्यादि (आज्ञ) करने को तैयार
गुरु को बुद्धिमान शिष्य आज्ञा माग कर फिर वादणा देने को
प्रवर्ते ।

आठ कारण से गुरुको वदना करने रूप नवमा द्वार

पडिकमणे सज्जाथे, काउस्सग्गा वराह पाहुण्णथे ।

आलोयण मम्बरणे उत्तमट्ठे य वदणाय ॥१७॥

पडिकमणे—प्रतिक्रमण मे
सज्जाथे—स्वाध्याय के वास्ते
काउस्सग्गा—पापों-सर्ग-वास्ते
अवराह—अपराध क्षमाने
के लिये
पाहुण्णथे— बहूपधार हुवे

साधु को
आलोयण— आलोयण के
वास्ते
सम्बरणे—पच्चकम्माण वास्ते
उत्तमट्ठे—अनशन के वास्ते
वन्णय—वादणा

अर्थ

१ प्रति क्रमण म (चार वक्त वान्दान गेना) २ स्वाध्याय
वास्ते ३ पापों-सर्ग वास्ते ४ पापों की क्षमा याचन करने वास्ते
५ वाहर से बने साधु पधारें हों उनको (गुरुको पूछकर) ६
आलोयण (लने हुए अपराधों की शुद्धि) वास्ते ७ उपवासानि
पच्चकम्माण वास्ते ८ अनशन वास्ते उन्दन करना (वादणा गेना)

बदन करते समय २५ आश्रयक करने योग्य जिसका
दममा द्वार

दोवण्य महाजाय आवत्ता चार चउसिर तिगुत्त ।

दुपवेसिग निक्खमण पणवीसावसग किङ्कम्मे ॥१८॥

दोवण्य—दो अग्रनत
महाजाय—एक यथा जात
आवत्ताचार—चार आवर्त
चउसिर—चार उक्त सिर
नमाना
तिगुत्त—तीन गुप्ति

दुपवेस—दो वक्त प्रवेश
इग निक्खमण—एक वक्त
निकलना
पणवीस—पच्चीस
आवसय—आवश्यक
किङ्कम्मे—चादणा मं

अर्थ

दो अग्रनत (कमर के ऊपर का भाग नमाना)
एक यथा जात (नम समय का श्रोत्रि या दीक्षा लेते समय
की मुद्रा) चार आवर्त (शुरु के पग और अपने मस्तक पर
हाथ लगाकर) चार उक्त मस्तक नमाकर उदन तीन गुप्ती
(मन उचन और काया की अकेलाप्रता) दोवक्त प्रवेश और
एक उक्त निकलना इस तरह पच्चीस आवश्यक द्वादशायत
उक्त ये होते हैं ।

विशेष—द्वादशावर्त वचन करने समय "इच्छामि
खमासमण" में धनसाहिआसे तक मे यदि उ कहेते समय अपना
आधा शरीर झुका देना जो पहिला अधगिनत और फिर दूसरी
उक्त भी इसी प्रकार कगत दूसरा अग्रनत करना चाहिये, जम
समय या दीक्षालेन समय जैसी मुद्रा हो वैसी नम्र मुद्रा
(दोनों हाथ चोट कर मस्तक ललाट पर लगाने वाली)

घटन करतेसमय करना वो यथाज्ञात समभना ।—‘अहो कायः
 काय’—रूप तीन और —‘जतामि, जयणि, जजचये’— रूप
 दूसरी तीन एक वक्त के घटन में और इसा प्रकार छ दूसरे
 वक्त के घटन में सब मिल कर १० आयत (गुरु के चरण पर
 हाथ लगा कर मस्तक पर लगाने रूपी) होते हैं—‘काय सफा
 म’—बहते समय अपना मस्तक गुरु के चरण पर झुकाना
 और —‘धामिमि धमासमणो’—बहते समय फिर मस्तक
 नमाना इसी प्रकार दूसरे घटन मभी होने से कुल चार वक्त
 मस्तक नमन (सिर नमन) होता है । मन वचन और काया
 को दूसरे व्यापार से हटाकर घटन करते समय अत्रीप्रकार
 से धाँजे में रखने रूप तीन गुप्ति समभना ।—‘अणु, जामहमे
 मिडमग ह’—कहकर दोनों वक्त घटन करते गुरु की आगा
 लेकर अवग्रह में प्रवेश करना वो दो प्रवेश समभना और
 पहला घटन करते समय —‘आयन्सिआथे’—कहकर
 अवग्रह से बाहर आना वो एक निष्क्रमण समभना । इमतरह
 द्वादशावत घटन में २५ आयतक करना चाहिये ।

किङ्कम्मपि क्खतो नहाड किङ्कम्म निजेरानागी ।

पणवीसामन्नयर साहू ठाण विराहता ॥१६॥

किङ्कम्म पि—घटन कोभा
 कुण तो—करता हुआ
 न होड—नहीं होता है
 किङ्कम्म—घटन से होने
 वाली
 निज्वरा भागी—निजरा

का अधिकारा
 पणवीसा—पचास म से
 अ नयर—एक
 साहू—साधु
 ठाण—स्थान को
 विराहतो—विराधता तथा

बन्धन को करता हुआ भी बन्धन से होने वाली निर्जरा का अधिकारी नहीं होता है पञ्चीश में से एक स्थान को विराघता हुआ साधू ।

विवेचन—बन्धना करते हुए भी पञ्चीश में कोई एक भी स्थान (आवश्यक) का विराघन करने वाला साधुवैरा बन्धन से जो सम्पूर्ण निर्जरा होती है उसका वो अधिकारी नहीं होता है ।

मुहपत्ति की पञ्चीश पडिलेहण का इर्यारवा द्वार

दिष्टिपडिलेह अगे, छउइपफोड तिगतिगम् तरिआ ।

अकखोड पमउजणया, नवनव मुहपत्ति पणवीसा ॥२०॥

निर्दू पडिलेहा अगे—एक
ट्रिष्टि प्रति लेखन

छउइपफोड—छ उँचा
प फोडा (खसरना)

तिग तिग—तीन तीन तक

अ तगिय—छनी से

अकखोड—एक खोडा (प्रह
ण करना)

पमउजणया—प्रमाजना

नव नव—नव नव

मुहपत्ति—मुहपत्ति कि

पणवीसा पञ्चीश पडिलेहन

अर्थ

एक ट्रिष्टि पडिलेहण छ उँचे पफोडा (२ बेसे मुहपत्तिका विनारे को खसेरना) तीन तीन तकनके आतरे नव अकखोडा (प्रहण करना) और नव प्रमाजना (तीन तीन अकखोडा के आतरे तीन तीन प्रमाजना) इस प्रकार से मुहपत्ति की पञ्चीश पडिलेहण ।

पहले अपने हाथ में एक बँत ।

गल के प्रमाण वाली जो मुहपत्ति है, उसके पह मुखले करके
 उसके एक तरफ सूत्र श्रौट, दूसरी तरफ अर्थतत्व करी सदहु
 एसा विचारता हुआ, उसके दोनों तरफ द्रष्टी से अच्छी तरह
 देखना वो पहलेली द्रष्टी पहिलेहवा फिर मुहपत्ति के उपरवे
 दोनों किनारे, दोनों, हाथों से, पकड कर उसको नचाने की
 तरह तीन तीन मीलकर छ उर्ध्वपफोडा करना । उसमें मुह
 पत्ति की डायी तरफ को डाया हाथ से तीन वक्त नचाकर
 ग्वखेरते हुए 'समकित मोहनीय' मिध मोहनिय, और मिध्या
 स्वमोहनीय परिहरु, एमा विचारना । उस के बाद जीमणी
 तरफ को भी पहले की तरह 'जीमणे' हाथ से ग्वखेरते हुए
 काम राग, स्नेह राग और द्रष्टि राग परिहरु' एसाचितवन
 करना फिर मुहपत्ति का एक पड समेट कर उसका तीन
 व धुरट करके जीमणे हाथ की आंगुलियों के छेटी म रखकर
 डावे हाथ के तला को नहीं लगाते हुवे मुहपत्ति को, अधर
 उची रख कर डावे हाथ के काडा की तरफ लेजाते शृहख
 करने योग्य तीन अफजोडा करना और डावे हाथका तला
 उपर तान बार फिराने रूप तीन प्रमाजना करना इसी तरह
 तीन तीन वक्त अफजोडा प्रमाजना डाया हाथ के तलाया पर
 जीमणे हाथ से करना, तान तीन अफजोडा और प्रमाजना डावे
 हाथ के तलाये पर करत अनुक्रम से इस प्रकार चितवन
 करना । 'सुदेव, सुगुरु सुधर्म आरु' कुदेव, कुगुरु कुधर्म
 परिहरु ज्ञान दशन चरित्र आदर गानदशन चारित्र विगध
 ना परिहरु, मन गुप्ति वचन गुप्ति' काय गुप्ति आरु मन
 द ड वचन, नड कायद ड परिहरु' उपर मुजय नव अफजोडा
 करने ग्रहण करने योग्य नव चितवन करना और नव प्रमाजन
 करना याग करने योग्य नवचितवन करना इसप्रकार से कुल

१= (अफलोद्ग प्रमार्जना) मे पहलेके ७ मिलाने से मुहपत्ति के तुल्य ३५ पडिलेहण होता है।

शरीर की पच्चीश पडिलेहण का चारमा-द्वार

पायहिणोणं तिअ तिअ, वमि अरबाहु सीस, मुहहियअ
अन्मुडठाहो-पिठे, चउ छप्पय देह पणवीसा ॥२१॥

पायहिणोण—प्रदक्षिणा से
तिअ तिअ—तीन तीन
गाम—डावी (और)
इयरबाहु—जामणी मुजा
सीस—मस्तक पर
मुह—मुखपर
हियअ—हृदयपर
अम—छत्रके

उदुह—उपर
अहो—नीचे
पिठे—पीठपर
चउ—चार ओर
छप्पय—छ पाँच की
देह—शरीरकी
पणवीसा—पच्चीश

अत्र- प्रदक्षिणा से तीन तीन डावी और जामणी मुह मस्तक व मुखपर हृदयपर पाँच के उपर नीचे पाठ पगकी छ पडिलेहणा इस तरह शरीरका पच्चीश पडिलेहण समझना।

द्विगेवन-पहले की तरह मुहपत्ति को पक टेना हावे होय की भुजा पर प्रदक्षिणा 'हास्य रति, अरति परिहरू और जीमण हृदय पर उपा भय, शोक, दुःख, परिहरू, एसा उपर तीनउक्त फेरत वृष्णलेश्या, नीलले हृदयमुखपर तीन उक्त पडिलेहण करना जाता गात्र परिहरू और हृदय पर शरीर, नियाण, शल्य, मिथ्या

इसी तरह दोनों छ सो केउपर नीचे और पीठ पर पडिले हण करता अनुक्रम से श्लोच, मान परिहृरु और माया, लोभ परिहृरु एसा विचारना तथा दोनों पग पर रजो हरण से पडिले हण करता अनुक्रम से पृथ्वीकाय अपकाय तेउकाय का जयलाकरु और वायु काय धनस्पति काय, त्रसकाय की रक्षा करु एसा मनमें चिंतयन करना हम तरह पुदय धर्म को काय की पच्चीश पडिले हण यनाई है परन्तु छी धर्म का शरीर यत्र से दबा हुआ होने के कारण तीन मस्तक की, तीन रुध्र की और चार दोनों खन्दों की इस तरह १० पडिले हण कम करते १५ पडिले हण सम्भव है और साध्वीर्षी के तो उगाड़े मस्तक के प्रतिक्रमण करने वा आचार है इस वास्ते उनके मस्तक की तीन पडिले हण होने से कुल १० पडिले हण शरीर की होती है वल की पडिले हण के २५ और दाब दाँकी कन्दोला और चावजा धनेर की पडिले हण में पदर के १० बोल कहना।

पच्चीश आवश्यक, मुहपति और शरीर की २५
पडिले हण करने में जो फल होता है

आवससभे सु जह मह कुणइपयत्त अहीण मरिषि ।

तिविह करणा वउतो तद तद से निज्जराहोड ॥२॥

आवससभे सु—आवश्यक म
जह जह—जैसे जैसे
कुणइ—करे
पयत्त—प्रयत्न
अहिण—हीन रहित
अरिषि—ज्यादा रहित
तिविह—तीन प्रकार क

करण—करण में
उवउत्ता—उपयोग वाला
तद तद—जैसे जैसे
से—तने
निज्जरा—निजरा
होई—होता है

हीनित—अपना
 विपलित चिय—डामाडो
 ल धित जाने
 दिदृश्यदिदृ—देरो न देखे
 सिग—शिगडा की तरह
 कर—राजा का कर मटसूल
 तम्मोक्षण—उमस हुटमारा
 जाना
 अपिद्वेषातिथ—दोय लगा
 पं र लगावे
 उण—कमती
 उतरचृतिश्र—उतरना प
 ऊँचे स्तर से बोलना
 मृश्र—मुँगा की तरह
 डडूर—ऊँचे स्तर से बोलना

नुदलिश्र—उवाडिया का
 तरट शुमाकर
 वपीसदोस—३२ दोषों से
 परिशुद्धम—शुद्ध
 विद्वम्मम्—उन्दन कर्म
 जो—जो
 पउँजइ—करते हैं
 गुरुण—गुरु को
 सो—जो
 पावइ—पाते हैं
 निगण—मोक्ष को
 अचिरेण—गोरे समय में
 विमाणवास—स्वर्ग को
 वा—प्रथवा

प्रथ

अनाहत श्लेष (बिना शास्त्र वादे) स्तब्ध दोष (अति
 मात, अकडाइ रगकर वादे) अपविद्ध (मानती की तरह
 वादना कि कर शीघ्र चलाजाय) परिपिडित (एक ही उन्दन के
 सत्र साधुओं का सामीलही उन्दे) टाल गति (तीडी की तगा
 कदता हुआ वादे या डोन की तरह उपटकर गये) श्र कु
 (गोहरण को अनुश की तरह रखकर वादे) कछभरिगि
 (काचमा की तरह घन्ता हुआ शरीर को चलायमान करत
 हुआ वादे) मन्व्योद्धत (मछकी तरह उछलता हुआ वादे) मन
 प्रकूट (मन में शाचार्यादि के दोषों को लोचरता हुआ वादे)
 वेदिकायद्ध—हाथ की रचना से युक्त (हाथ को बाहर रख
 कर वादे) भवेन (विद्या मात्र विगेरे के लालच से वादे) स

के बाहर करने के डर से, गोरव (समाचारी में कुशल है
 ऐसे अहंकार से) मित्र (मित्र होने के कारण) कारण (वस्त्रादि
 के कारण घादे) स्वैय, चोरकी तरह छिपता हुआ घादे, प्रत्य
 नीच रिता अचमर घादे, रूपट स्वयम् या गुरु जिस समय
 प्रोचित हो उस समय घादे, तजित आगली से तजना करता
 दुत्रा घादे, शत्रु मित्रासि पैदा करनेको कपटसे घादे, हीलिउ
 अशो करता हुआ घादे, विपरीतु चित, अदन करते समय
 विषयाशे करे, हृष्टाहृष्ट कोइ दखता हो तो घादे न देखता
 होतो न घादे, अंग, पशु के साँग की तरह ललाट के दो
 पटसे घादे, कर राजा के वेगार समझ घादे, तमोचन इन
 मे कम छुटकारा पाउं, अलिष्टानलिष्ट रजोहरण और
 मस्तक पर हाथ लगावे न लगावे, कमती अघर गोल कर
 घादे उत्तर झूलिवा ऊँचेस्वगस मत्तथेण नदामि कहे,
 मुँगा का तरह मन में घोलकर घादे, मयदन्दन ऊँच स्वर
 से गोल रजो हरण को उम्मादिधा की तरह घुमा कर घादे
 इस तरह २० दोर रहित जो गुरु का मन्दन कर्म करते हैं
 जो अल्प समय में मोड़ अथवा स ग को पाते हैं।

त्रिवेचन—वेदिकाय २ दो हाथों के ऊपर के नीच को
 हाथ रखकर, दो हाथ के बीच में दो हाथों रख कर, दो
 हाथ में बीच में एक हाथ रख कर या गोल में हाथ रख
 कर विपरीत पक्ष से न करे। अलिष्टानलिष्ट दोष के
 चार भागों, १ हाथ से रजोहरण और मुहपत्ति को स्पर्श कर
 यह पहला भाग शुद्ध और बाकी के तीन अशुद्ध हैं। २
 रजोहरण के हाथ लगावे परन्तु मस्तक पर नहीं लगावे।
 ३ मस्तक पर हाथ लगावे परन्तु रजोहरण पर न
 ४ मस्तक दोनों पर हाथ न

वन्दन से होने वाले ६ गुण का स्वदमा द्वार
इहक्ष्मचगुणा विणयो, वायर भाणाइभग गुरु पूआ ।
तित्थपराण यआणा, सुअधम्माराहणाऽकिरिया ॥२७॥

| | | |
|----------------------------|--|-----------------------|
| इह—यहाँ पर | | तित्थ पराण—तीर्थकर का |
| उच्चगुणा—उ गुण | | आणा—आशा |
| विणयडवायर—विनय का | | सुअधम्म—धृत धर्म का |
| आराधन | | आराहणा—आराधन |
| मणारभेग—मानका नाश, चय | | अकिरिया—मोक्ष |
| गुरु पूआ—गुरुकी पूजा भक्ति | | |

अर्थ

पदा वन्दना करने से जो उगुण प्राप्त होते हैं १ विनय का पालन होता है । २ मानादिक को चय होता है ३ गुरु की भक्ति होनी है ४ तीर्थकर भगवान के आशा का पालन होता है ५ धृत धर्म का पालन ६ मोक्ष

गुरु स्थापना का प दमा द्वार

गुरु गुण तनम् तु गुरूं, अहवतत्थ अक्वाइ ।
अहवा नाणाइतिमै, ठविज्ज सकरवै गुरुअभावे ॥२८॥
अकखे वराडअे वा, कठे पुत्थअ चित्तम्मेश्च ।
सम्भाव मस-नावै, गुरुठवणा इत्तरावकहा ॥२९॥
गुरु विरह मिठयणा, गुरुवअे सोव दसएत्थच ।
जिणविरह मिज्जिणचिव, सेवणमतण सहल ॥३०॥

अर्थ

जैसे जैसे आवश्यकों से कम और ज्यादा रहित प्रफन करे तीन प्रकार के करण (मन उचन और काय) से उपयोग वाला जैसे जैसे उसको निर्जरा होती है ।

दोष अण्डिअ थड्ठिअ, पविद्ध परिपिडिअ च टोलगइ
अ कुश कच्छम रिगिअ, मच्छुवत्त मण पउट्ट ॥२३॥
वेइय पद्धमय त मय गारव मित्तकारणा तिन्न ।
पडणाय रुद्धतज्जिअ, सड्ढील्लिअ विपलि उ चियय ॥२४॥
ट्टिमदिट्ट सिग करतम्माअण अणिद्धणालिद्ध ।
उण उत्ता घूलिअ मूअ ढड्ढर चुडलिअ च ॥२५॥
वत्तास दास परिसुद्ध, निक्कम्म जोपउज्जइ गुरुण ।
साभावइ निवाण अचिरण विमाण वासम्वा ॥२६॥

दोष—दोष

अण्डिअ—अनादर

थुड्ठिअ—अक्कड

अपविद्ध—भादोरी

परिपिडिअ—परिपिडित

इकठा

टोलगइ—ताडकी चाल

दाल का तरह

अ कुस—अ कुश

कच्छमरिगाअ—का-माकी

तरह रीगता हुधा

मच्छुवत्त—मछली का

तरह चपन

मणपउट्ट—छराव मन मं

वेइयवद्ध—वेडिका घट्ट

भयत—सेवा की लालचसे

भय—डर

गारव—अहंकार

मित्त—मित्र

कारणा—बछादि के कारण

तिन्न—स्तै य चोरकीतरह

पडणीय—बिना अदसर

रुद्ध—क्रोधित

तज्जिअ—तजित तजना

करता हुआ

हीलिङ—अथवा
 विपलिङ विवर्य—डामाडो
 ल चित धाले
 दिदृषदिदृष्टं—देते न देखे
 सिंग—शिगडा की तरह
 कर—राना का कर महसूल
 तम्माशण—उससे छुटकारा
 पाना
 अण्डिदणालिघ—हाथ लगा
 ये न लगाये
 उणु—कमती
 उत्तरचूलिअ—देरना पर
 उच्च स्तर से घोलना
 मूअं—मुँगा की तरह
 दृष्टर—उच्च स्तर से घोलना

चुइलिअं—उपाडिया की
 तरह गुमाकर
 यत्रीसदोस—३२ दीपों से
 परिशुद्धम—शुद्ध
 किइरम्मम्—उन्दन धर्म
 जो—जो
 पउंजइ—करते हैं
 गुण्णं—गुरु को
 सो—गे
 पावइ—पाते हैं
 निव्वाणं—मोक्ष को
 अचिरेण—दोड़ समय में
 विमाणवासं—दुग्ग को
 ग—अथवा

अथ

अनारत -ोप (प्रिना आदर वादे) स्तब्ध दोप (अभि
 मान, अफडाई रखकर वादे) अपविद्ध (भाइती की तरह
 वादनानि कर शीघ्र चलाजाय) परिपिद्धित (एक ही उन्दन से
 सब साधुओं को सामीलही वादे) टोल गति (तीही की तरह
 कदता हुआ वादे या डोल की तरह उपडकर वादे) अ कुग
 (रजोहरण को अन्नुश की तरह रगकर वादे) कच्छभरिगित
 (काचया की तरह घसता हुआ शरीर को चलायमान करना
 हुआ वादे) मत्स्योद्धर्त (मछली तरह उछलना हुआ वादे) मन
 प्रदुष्ट (मन म आचार्यादि के दीपों को सेचारता हुआ वादे)
 वेदिकावद्ध—हाथ की रचना से युक्त (हाथ को बाहर रख
 कर वादे) भर्जन (प्रिया मन्त्र विगेरे के लालच से वादे) सध

के बाहर करने के डर से, गौरव (समाधारी में कुशल है
 ऐसे अहंकार से) मित्र (मित्र होने के कारण) कारण (वस्त्रादि
 के कारण वादे) स्त्रैय, चोरकी तरह छिपता हुआ वादे, प्रत्य
 नीक विना अग्रसर वादे, रूष्ट स्वयम् या गुरु जिस समय
 प्रोध्यत ही उस समय वादे, तर्जित आगली से तजना करता
 हुआ वादे, शठ विश्वास पैदा करनेको कपटसे वादे, हीलिउ
 अग्रशी करता हुआ वादे विपीरि कुचित, वन्दन करते समय
 विप्रथाओं करें, दृष्टादृष्ट कोई दम्बता हो तो वादे न देखता
 होतो न वादे शृंग, पशु के सींग की तरह ललाट के दो
 पडसे वादे, कर राना के वेगार समझ वादे, तमोचन इस
 से कय छुटकारा पाउं, अलिष्टानलिष्ट रजोहरण और
 मस्तक पर हाथ लगावे न लगावे, कमती अक्षर घोल कर
 वादे उत्तर चूलिका ऊँचेस्वर से मन्त्रश्रेणी ३ दामि कहे,
 मुँगा की तरह मन में घोलकर वादे, सब वन्दन ऊँच स्वर
 में बोले रजो हरण को उन्वाहिया की तरह, घुमा कर वादे
 इस तरह ३२ दोष रहित जो गुरु का वन्दन कर्म करते, हैं
 जो अल्प समय में मोक्ष अथवा स्वर्ग को पाते हैं।

विवेचन—त्रैफात्रद्व दो हीत्रण ४ उपर के नीचे १०
 हाथ रखकर, दो हाथ के बीच में १० हीत्रण रख कर, दो
 हाथ में बीच में एक हीत्रण रख कर या खोल में हाथ रख
 कर विपरीत पण्डित २ दन करे। अलिष्टानलिष्ट दोष के
 चार भागों, १ हाथ से रजोहरण और मुहपत्ति को स्पर्श कर
 यह पहला भाग शुद्ध और घासी के तीन अशुद्ध है। २
 रजोहरण के हाथ लगावे परन्तु मस्तक पर नहीं लगावे।
 ३ मस्तक पर हाथ लगावे परन्तु रजोहरण पर नहीं लगावे।
 ४ रजोहरण तथा मस्तक दोनों पर हाथ न लगावे।

वन्दन से हाने वाले ६ गुण का चन्द्रमा द्वार

इहश्चगुणा विणयो, वायर माणाइभग गुरु पूआ ।

तित्थयराण यआणा, सुअधम्माराद्वयाऽकिरिया ॥२७॥

| | | |
|----------------------------|--|-----------------------|
| इह—यहा पर | | तित्थ यराण—तीर्थकर की |
| छच्चगुणा—छ गुण | | आणा—आज्ञा |
| विणयउवायर—विनय का | | सुअधम्म—धृत धर्म का |
| आराधन | | आराहणा—आराधन |
| मणाइभंग—मानका नाश, छय | | अकिरिया—मोक्ष |
| गुरु पूआ—गुरुकी पूजा भक्ति | | |

अर्थ

यहा वन्दना करने से जो छगुण प्राप्त होते है १ विनय का पालन होता है । २ मानादिक का छय होता है ३ गुरु की भक्ति होती है ४ तीर्थकर भगवान के आज्ञा का पालन होता है ५ धृत धर्म का पालन ६ मोक्ष

गुरु स्थापना का ५ दरमा द्वार

गुरु गुण त्तनम् तु गुरूँ, अहवत्तत्थ अक्वाइ ।

अहवा नाणाइतिवै, ठविज्ज सकरवै गुरुअभावे ॥२८॥

अक्खे वराडये वा, कट्टे पुत्थेअ चित्तकम्मेअ ।

सम्भाव मसम्भावेँ, गुरुठवणा इत्तरावक्खा ॥२९॥

गुरु विरह मिठवणा, गुरुवअे सोव दमए गच ।

जिणविरह मिजिणविव, सेवणमतए सहल ॥३०॥

अर्थ

१ वदन करने की इच्छा प्रगट करतें हैं । २ अग्रग्रह में प्रवेश करने की आशा मागतें हैं । ३ श्लोकादि के वाच्य और मिथ्यात्मादिक शक्य मं) गुरु को सुख साता (कुशलता) पूछत हैं । ४ तपस्या, चाण्डिय आदि सुख पूयक बलरहा है । ५ औषध से इन्द्रिय और मन से शरीर दुख रहित है । ६ और दोषों को भी क्षमाते हैं । इस प्रकार वादणा देने वाले शिष्य के छ स्थान हैं ।

वादणा के छस्थान में गुरु के छ वचन का बीसवां द्वार,
 छद्रेण गुजाणामि, तद्वत्ति तुभ्यपि वद्व्ये श्रैव
 ग्रहमवि स्वामेभि तुम वयणाइ वदणाइ वदण रिहस्म ॥३४॥

इद्रेण—जैसी तुमारी इच्छा
 अणुनाणाम—मे आशा देता
 तद्वत्ति—इस प्रकार
 तुभ्यपि वद्व्ये—तुम कोभी है
 वद—इस प्रकार

ग्रहमवि—मेभी
 स्वामेभि—क्षमाता हैं
 तुम—तुमको
 वयणाइ—वचन
 वदण—वादणा के
 अरिहस्म—योग्य का

अर्थ

१ जैसी तुमारी इच्छा । २ मे आशा देता हूँ ३ इसी प्रकार है ४ तुमको भा है ५ इस प्रकार है ६ मेभी तुमको क्षमाता हूँ । यह वादणा देने योग्य आधायादि के वचन हैं ।

निवेदन—वादणा नहीं दिलाता होतो पटिकरुह (ठहरो) या तिविद्रेण (मन वचन काया से मनाइ करता) एसा बहे ।

गुरु की तेतीस आशातना नहीं करने रूप २१ मा द्वार
 पुरश्चो पक्खासन्ने, गता चिट्ठण निमीअणाय पण्ये ।
 आलोयण अपडि सुणण्ये, पुब्बालवण्येअ आलोअ्ये ॥३५॥
 तहउवदेस निमंतण, खट्वाय यण्ये तहा अपडि सुणण्ये ।
 खट्ठत्तिअ तत्थगअ्ये, किंतु मतज्जायणो सुमण्ये ॥३६॥
 नोसरसि कहळित्ता, परिस चित्ता अणु ट्ठियाइक्के
 सेयार पाय पट्टण, चिट्ठुच्च समासण्ये आवि ॥३७॥

पुरश्चो—स मुख
 पक्ख—पक्ष (पगल में)
 आसन्ने—नजदीक से
 गता—जाते
 चिट्ठण—कपूरहत्ते
 निमीअण—बैठते
 आयण्ये—बसु करते
 (दाय घीते)
 आलोयण—आलोचन
 अपडिसुठण्ये—अभाव नहींदेना
 पुब्बालवण्ये—पट्टले बात
 करना
 आलोअ्ये—आलोचने
 तट—इस प्रकार
 उवदन्स—देखावे
 निमंतण—निमंत्रण
 (अधरात)

खट्ठ—खिलाना
 आयण्ये—खावे
 तहा—इसी तरह
 अपडिसुण्ये—जवाब नहीं
 देना
 खट्ठत्ति—खाया है एसा
 तत्थगअ्ये—यही से बैठा हुआ
 बोले
 कि—क्या
 तुम—तु
 तज्जाय—तजना करना
 नोसुमण्ये—अच्छे मन वाले
 नहो
 नोसरमी—सुनतानहींहै ?
 कहळित्ता—कथा का छुद
 (भेंग)
 परिसचित्ता—पर्वदा का भग

अणुद्विपार—नहीं उठते हुए
 कहे—बोले
 सधार—सधारा की
 पायच्छृणु—पगलगावे
 चिट्ट—बैठे

उच्च—उचे आसनपर
 सम—बराबर
 आसणे—आसन पर
 आशि—पण

अर्थ

आगे बगल में और नजदीक जाते खड़े रहते बैठते (गुरु से पहले) धनु करता या हाथ पग धोते इरियापड़ी करे रात्रि के समय गुरुके घोखाने पर भी जयाब न देवे। गृहस्थ से गुरुमहाराज के पहले बोले, और गोचरी दूसरे साधु के पास आलोच्य कर फिर गुरु के पास आलोच्ये। इस तरह गोचरी दूसरे साधु को देखावे उस को निमन्त्रण करे। गुरु के पहले दूसरे साधु को खिलावे अच्छा आहार खाय खावे इसी तरह दिन का भी गुरु के घोखाने पर जयाब नहीं देये कठोर वचन (खाया एसा) कहे, अपने आसन पर बैठे हुआ बोले क्या कहते हो ? तुच्छकार पूयक बोले, गुरु की तजना करे (सनमुख उत्तर देवे) व्याख्यान में अच्छे विचारक नहो, इस को अथ तुमको बराबर पाद नहीं इस कथा को मैं अच्छीतरह समझाऊंगा बेसा कह कर कथा का भग कर, गोचरी का समय होगया एसा कह कर परिपदा का भंग करे, परिपदान ही उठे तो अपनी चतुराई देखाने को कहे। गुरु के आसन (सधारा) को पग लगावे गुरु से ऊँचे या बराबर के आसन पर बैठ (गुरु के जैसे अधिक कीमत के वस्त्र रखे)

विवेचन—हामादि का सधार २॥ हाथ का और उन या रुह का शय्या अग प्रमाणे समझना।

सुमे और शाम'का छटि प्रतिक्रमण की विधि का
 साधीसमा द्वार
 इरिया कुसुमिणु, मग्गो चिइ उण्ण पुत्ति वदणालोय
 उण्ण ग्गामण उदण, मवरचउद्धोम दुसज्जाआ ॥३८॥
 इरिया चिइ उदण पुत्ति, वदण चरिय वन्दणालोय
 उण्ण ग्गामण चउद्धोम, दिवमुमग्गा, दुसज्जाआ ॥३९॥

इरिया—इरियावहि
 कुसुमिणु—खरावस्वपन का
 उसग्गो—काउस्सग्ग
 चिइवदण—चेत्य वन्दन
 पुत्ति—मुह पत्ति
 वन्दण—दो वादना
 आलोय—आलोचना(रात्रिकी)
 वदण—दो वादना
 ग्गामण—अनुठियो ग्गमाचे
 वदण—दो वादना
 सर—पच्चकण्ण
 चउद्धोम—चार गोम वदन
 दुसज्जाआ—समाय के दो
 आदेश
 इरिया—इरियावहि

चिइवदण—चेत्य वदन
 पुत्ति—मुहपत्ति
 वदण—दो वादना
 चरिय—पच्चकण्ण
 वन्दण—वादना
 आलोय—आलोचना(दिनका)
 वन्दण—वाचना
 ग्गामण—अनुठिया
 चउद्धोम—चार गोम वदन
 दिवस—दिवसिअ प्रत्यक्षित
 का
 उस्सग्गो—काउस्सग्ग
 दुसज्जाआ—समाय के दो
 आदेश

अर्थ

इरियावहि (समा० के लागस्स०) तक खराव स्वपन
 निमित्त का काउस्सग्ग चेत्य वदन(नमुण्ण याजय यियराय तक)

मुहपत्ति, दो वादना, इच्छा० राष्ट्र आलोड 'दो वादना
अभुट्टिखमना, दो वादना, पञ्चकलाणु चार धोम घदन (भग
वतनादि को) सज नाय के दो आदेश मागकर सजभाव करे।

साम का प्रति प्रमण

इधियाग्रहि (समा० से लोगसम० तक) चैत्यवन्दन
(नमुत्पुण पाजय गी यराय तक) मुहपत्ति 'पडिलेना दो वादना
दियस चरिय का पञ्चकलाण, दो वादना इच्छा० दिउसिअ
आलोड 'दो वादना अभुट्टिखो क्षमान चार धोम घदन
(समासमण सहित भगवान हे विनेर) दक्षि प्रायश्चित्त
का काउहसग सजजाय का दो आदेश लेकर सजजाय करमा
वदन स होनेवाला फल

श्रेय किइकम्म विहिं जुजता चाणु करणमा उता ।

साहु खवति कम्म, अणैगभव मन्चिय यणत ॥ ४० ॥

अं य—इस प्रकार
किइकम्म—वादनाकी
विहिं—विधिको
जुज ता—करता हुआ
चरण—चरणसित्तरा
करण—करण सित्तरा
आउता—सावधान

साहु—साधु
खवत—क्षपाते हैं
कम्मम्—कर्म
अणैगभव—अनेक भवोंमें
सचिय—एकत्रितकिये हुए
अणुत—अन ता

अर्थ

इसप्रकार वदन विधि को करता हुआ चरण सित्तरि
और करण सित्तरि से सावधान साधु अनेक भवों में किए
हुये अनते कर्मों को क्षपाया है।

अप्यमद् भव्य बह्निष्य; भासियं विवरियंच जमिहमग्रे ।
 त सोदंतु गीयत्या, अणभि निवेसो अमच्छरिणो ॥४१॥

अप्यमद्-तुच्छ बुद्धि वाले
 भव्य-भय प्राणी
 बह्निष्य-ज्ञान के वास्ते
 भासियं-कहा हो
 विवरियम् विपरित (उल्टा)
 जमिहमग्रे-जो यहापर मेने

तसोदंतु-उस को सुधारना
 गीयत्या-गीतार्थ पुर्य
 अणभिनिवेसो-कदाग्रह
 रहित
 अमच्छरिणो-ईष्या बिनाके

अर्थ

तुच्छ बुद्धि वाले भव्य प्राणीओं के वास्ते मेने जो यहा पर (भाष्य म) कुछभी उल्टा कहाहो तो उसको गीतार्थ पुर्य (सूत्र अर्थ के जाणने वाले) कदाग्रह रहित ओर ईष्या बिना सुधारे ।

समाप्त

शुद्धिपत्र

| | | |
|---|-------------|------------|
| ४ | अगुद्ध | शुद्ध |
| १ | दूसर | दूसरा |
| २ | धन : | धन |
| २ | काय | काय |
| २ | द्वादशवर्त | द्वादशवर्त |
| ५ | द्वादशवर्त | द्वादशवर्त |
| ४ | पदवीधारीऋ | पदवीधारीको |
| ८ | किइकम्पे | किइकम्मे |
| ० | त्रिइकम्पे | त्रिइकम्मे |
| ९ | उनका | उनको |
| ० | बहन | बन्दन |
| ० | आशातन | आशातना |
| १ | नीं | नींदा |
| ४ | अपेक्षा करे | उपेक्षा कर |
| ४ | कुशली | कुशिल |
| ५ | गुणसे | गुणमे |
| | ता | |
| ६ | उ | छेद |
| ७ | पराहुते | पराहुते |
| ७ | आहार | आहार |
| ० | वचचे | वचमे |
| ० | सफाम | सफास |
| १ | नहाइ | नहोइ |
| २ | अंग | अंगा |
| २ | सदहु | सदहु |
| २ | | एमा |

| | अनुसू | शुद्ध |
|----|---------------|---------------|
| ०९ | गवि-बा | टवि-बा |
| २९ | समाचार्य | स्पापनाचार्य |
| २ | सकमे | सकस |
| २९ | पतश | प्रत्यश |
| २९ | काटा | काटा |
| २० | अनुरस्थिती से | अनुरस्थिती मे |
| २९ | उरदेशगत्य | उवदशगत्य |
| २९ | अनुरस्थिती से | अनुरस्थिती मे |
| ३० | मया | सया |
| ३० | कल्पना | कल्पता |
| ३६ | पारा | बारह (१२) |
| ३२ | संश्ल | संश्ल |
| ३२ | लीना द | लीन पद |
| ४२ | गमणि उओचे | गमणि उओमे |
| ३२ | मुचेण | मुमेग |
| ३२ | चे | मे |
| ३२ | थ | म |
| ३० | चे | मे |
| ३२ | श्र णा | श्र टाणा |
| ०३ | शल्पमे | शल्पमे |
| ३३ | कदणाइ | × |
| ३४ | निमीअणायण | निसीअणायण |
| ०४ | हपटि | अपटि |
| ३४ | गदाय | गध्याय |
| ३४ | नु-म | नुम |
| ३४ | विण | निता |

| | | |
|-------|----------------|----------------|
| पृष्ठ | अभुद्र | शुद्र |
| ३४ | सेषार | सषारा |
| ३४ | तत्रगीकम | तत्रगीकम |
| ३४ | आशाना | आशाना |
| ३४ | अवद्विमुटाने | अवद्विमुटाने |
| २४ | तत्र | तद् |
| ३४ | (अत्रगत) | आमत्र |
| ३४ | नेषरमी | नेषरमी |
| ३४ | परिसंयिता | परिसंयिता |
| ३५ | करता | करते |
| ३५ | सेषार | सषारा |
| ३६ | छटि | छाटे |
| ३६ | चरिय | चरिय |
| ३६ | अभुद्रिया | अभुद्रिया |
| ३६ | चरिय | चरिय |
| ३६ | अभुद्रिया | अभुद्रिया |
| ३६ | (त्रमा० से) | (त्रमा० से) |
| ३६ | आलापना | आलापना |
| ३७ | अभुद्रियमना | अभुद्रियमना |
| ३७ | (भगवानाधिको) | (भगवानाधिको) |
| ३७ | चरिय | चरिय |
| ३७ | हे | ह |
| ३७ | चाण | चरण |
| ३७ | करणमा-उता | करण-माउता |
| ३७ | सन्चियगत | मगत |
| ३७ | सषारा हे | सषारा हे |
| ३८ | त सोहेतु | त सोहेतु |
| ३८ | भासिय | भासिय |

॥ श्री पञ्चखाण भाष्य अर्थ सहित ॥

पञ्चखाण भाष्यके ९ द्वार के ९० भेद

दस पञ्चखाण चउविहि आहार दुसीसगार अदुरुता
दस विगइ तीस रिगइगय, दुहभगछसुद्धिफल ॥ १ ॥

| | | |
|--------------------------------|--|---|
| दस पञ्चखाण = दस पञ्च खाण | दुसीसगार = बाबीस आहार | नीवियाता (नीवीगइ) दुह भगा = दो प्रकार का भागा |
| चउविहि = चार प्रकार कि विधि | अदुरुता = एक वक्त कहा हुआ | छ शुद्धि = उ शुद्धि |
| चउआहार = चार प्रकार का आहार | दस विगइ = दस विगइ तीस विगइ गय = तीस | फल = फल |

अर्थ

(१) दस पञ्चखाण (२) चार प्रकार कि विधि (३) चार प्रकार का आहार (५) दुसरी वक्त नही कहे हुवे ऐसे बाबीस आहार (५) दस रिगइ (६) तीस निवियाता (नीवीगइ) (७) (मूल गुण और उत्तर गुण पञ्चखाण रूप) दो भागा (८) पञ्चखाण कि छ शुद्धि (९) (पञ्चखाणसे इस लोक और पर लोक संबधी इस तरह) दो फल इस प्रकार कुल ९ द्वार के ९० भेद हुवे

विवेचन - पञ्चखाण = (प्रतिशा) जिस तरह का वत अपनसे पालन हो उस का नियम गुरु या संघ के समक्ष करना, पञ्चखाण के दो भेद (१) मूल गुण पञ्चखाण और पिंड (आहार) विशुद्धि आदि उत्तर गुण पञ्चखाण है भाष्यके पाँच अणूक्त यह तो मूल गुण पञ्चखाण और बाकी के दिगू विरमणादि उत्तर गुण पञ्चखाण है

उत्तर गुण पञ्चखाण के दस भेद का पहला द्वार

अणागय मइक्कत कोडी सहिय नियटि अणगार
सागर निरवसेसं, परिमाण कइ सके अइया ॥ १ ॥

| | | |
|-----------------------|-----------------------|------------------------------------|
| अनागत = आनेसे पहले | निषट्टि = निश्चय | निरपयोग = अनशन |
| अर्द्धकृत = पीछेसे | अनागार = बीना आगार के | परिमाणकृत = परिमाण |
| कोटी सद्विष = कोटी के | सागार = आगार के | सके = संकेतका |
| साध (संधि के साध) | गहीत | अडा = आप-अडा (नवधारणी आदि १०) |

अर्थ

(१) अनागत (गुरु योग के सेवा के करते पयुग आने के पहले अट्टम (तैला) का तप करना (२) अतिमांत (गुरु योग के संघ कारण से अट्टम नहीं हुआ हा तो पीछे से करना) (३) कोटिसहित (सम जुग ऐसे दो पयवण कि संघि करना) (४) निषट्टित, पहले के प्रतिष्ठानुप पयवण का निश्चय करना (५) अनागार (महत्तारागारेण आगार के कि करना) (६) सागार (२२ आगारां से करना) (७) निरपयोग (अनशन चारदि प्रकार के आहार का त्याग करना) (८) परिमाणकृत (दत्ति कय घर और द्रव्यादि का परिमाण करना) (९) साकेतिक (अंगुग, मुडी, गी पसीना, ज्योति, जलधिदू पर और उभास का संकेतवाला) नवधारणी आ

विवेचन (१) अनागत पयवण = पयुग योग आनेपर दूसरे वेधावधादि (सेवा) करने के विचार से गुरु कि आज्ञा लेकर पर आने पहले अट्टमादि तप करे) (२) अतिमांत = पयुग्यादि पवने का आवश्यक कारण से अट्टमादि तप न हो सका हो तो पीछे से करना (३) कोटिसहित एकसरसे पयवणो कि संघी मीलाना वो समकोटि. (४) एकासने पर दूसरे दिन फिर एकाछा करना) और अलग अ पयवणो कि संघि मिचाना वो विषमकोटि (जैसे आयबिल उपर दूसरे दिन एकासना करना) (५) निषट्टित प संघयण वाला कोई एसा विचार करे कि अमुक दिन मे ऐसी तपस्या करे फिर कोई बड़ामारी कारण आज्ञासे तो भी चारे हुवे दिन पर वो तप अवश्य करे (५) अनागार अप्रत्येग भोगेण और सदसागारेण ये आगार तो सब पयवणो मे होते ही हैं परन्तु महत्तारागारेण आदि आ जिसमे नहीं होवो (वर्तमानमे प्रज रूपभनाराच संघयण नहीं होने से नियं

और अनागार पञ्चक्याण विच्छेद हुवे समझना) (६) सागार = आगार
 संहित पञ्चक्याण (७) निरयशेष = चार ही आहार और अनाहारी
 वस्तु का त्याग करना (अनान करना) (८) परिमाणम्न = घर,
 कवल, द्रव्य और दत्ति का परिमाण (अरुह घरसे जो पानी आदि
 जितना द्रव्य एक माघ मे दाता दे उमका नाम दत्ति) * (९) साकेतिक =
 सकेतमाला पञ्चक्याण उसके ८ भे * (१) अगुम्सहिय = मुटिम अगुय
 ररकर पञ्चक्याणपाले (२) मुटिमहिय = मुटिवानकर नवकारगिन कर
 पञ्चक्याणपाले (३) गठीसहिय = नवकारगिन कर गाठ छोड़कर पञ्चक्याण-
 पाले और पीऊ नवकारगिन कर गाठ लगावे जो भुल जाय तो चउविहार करे.
 ४ प्रम्वेद सहिय = पसीना मुने जवतक ५ घरसहिय = घर आठ तब तक
 ६ उसास सहिय = अमुक श्वासोश्वास लेउ तब तक ७ स्निगुक सहिय =
 हाथ पग या बदन के उतर क बलके बीदु मुके तब तक ८ ज्योतिष्क
 सहिय = दीया आदिकि ज्योती रहे तब तत्फलनाहो तब एक नवकार
 गिनकर पाला जा सकता है १० अद्धा, पञ्चक्याण समय का प्रमाण वाला
 (नवकारही आदि १० पञ्चक्याण)

अद्धा पञ्चक्याण के दम भेद

नवकार सहिअ पोरिसि, परिमुद्धे गासणे गडाणेअ
 आयविल अमतट्टे, चरिमे अ अभिगाहे विगइ ॥ ३ ॥

| | | |
|--|-------------------------------------|----------------------------------|
| नवकार सहिअ = नवकार सहित | ओगासण = ओगासना (एक वस्तुभो जन) | अमतट्टे = उपवास |
| पोरिसि = पोरसी | ओगडाणे = ओकलडाना | चरिमे = दिग्ग चरिम |
| पुरिमइ = पुरिमाद (दो प्रहर दिन चडे) | आयविल = आधील | अभिगाहे = अभिग्रह विगइ = विगइ |

* इस प्रकार १-२-३ आदि जितनी दत्ती लेना हो उतनी दत्तिक
 परिमाण होता है ।

अर्थ

१ नमुक्कारसी (मुयोदयसे दो घड़ी तक) २ पोरसी (मुयोदयसे रा-
 पहरतक) ३ पुरिमद्द (मुयोदयसे दो पहर तक) ४ अफासना ५ अक्ल टण-
 (एकस्थान पर बैठे हये एक समयही भोजन करना और उसी जगह बन्दे
 ले लेना खांभे नहीं लना और इसमे हाथ और मुह सिवाय दुसरा हां
 अगनहीहिलाना) ६ आरिन, ७ उरवास ८ दिरस चरिम ९ अरिन
 और १० विगय विवेचन = १ नवकारसहिय (नरकारसी) ' नवकार स
 कराले ' यह मुयोदयसे दो घड़ी के समय का पचकवाण कहलाता है २
 पोरसी एक प्ररका प्रमाण, सा (साध) पोरिमी = दो प्रहर का प्रमाण
 पचकवाण समस्तना दिनके चोये भाग को पोरसी कहते है ३ पुरिमद्द
 दो प्रहर का प्रमाण यह पचकवाण दिनके मध्यभाग मे पुरा होता है ४
 अक्लसणा यह पेइले कि पोरसी आदि के साथमे एकही स्थान पर बन्द
 निर्जिव आहार पाणी लेनेसे होता है ५ अक्लठाणा-यह पेइले कि तर
 एकही स्थान पर भोजन करते हाथ और मुह सिवाय दुमरा अगन हिलते हुं
 उसीस्थान पर पाणी मी ले लेना चाहिये अफासनामे तो बाइमेमी प्रासु
 पानी लीया जाता है पर इसमे उसीस्थान के बाद नहीं लीया जाता है ६
 आयवील - रस कसविना (निरस) का भोजन एक हि वक्त करने से होता है
 अफासन मे रस, कसगाला भोजन ले सकते है पर आयवील और निवी मे
 नहि लिया जाना है, ७ अभत्तट्ट (अभक्तार्थ) सारादिन आहार और
 पाणी त्याग कर या शीफ णिजव-प्रासुक पाणी लने से होता है, इन प्रकार के
 उरवास यथा सक्ती एक या अधिक भी किये जाते है ८ चरिम-यह दिरस
 चरिम चोविहार आदि करने से या भरचरिम यास्त जिव अनशन वरन से
 होता है ९ अभिग्रह-एसा कार्य करने या होने पर ही एमी वस्तु लेउगा
 एसा जो नियम करना उस को अभिग्रह कहते है द्रय से काल से,
 क्षेत्र से और भाव से य- अभिग्रह हो सक्ने है १० विगइ-दूध, दइ घी,
 तेल गुड आदि इसी तरह इतक निरियाता का यथासक्ती त्याग करने से
 विगइ नि विगइ का पचकवाण होता है, इनमे मांस, मदिरा शहद और
 मन्लन यह चार थड़ी विगइ का त्याग तो साथ मे ही आ जाता है
 इस प्रकार से दशभेद कहे इसमे ' नवकारसहिय ' का समय एक महूर्त प्रमाण

हा है यह पञ्चक्याण भी नवकारसहिय साथही होता है जब पोरसी आदि के पञ्चक्याण का समय पुरा हो तब नवकारगीणकर ही वो पञ्चक्याण पालने में आता है और 'नवकारसहिय' आदि के पञ्चक्याण रात के किये हुवे चोविहार आदि को पुष्ट करता है एकसना, अश्लठाना, आवधिल, उपवासदि में रात्रि को सर्वथा चारो आहार का त्याग होना है

पञ्चक्याण करने के पाठरूप ४ प्रकार की विधिका दुमरा द्वार

उगगभे सूरें अनमो, पोरिसि पञ्चक्याण उगगभे सूरें
सूरें उगगभे पुरिम अम्भतट्ट पञ्चक्याणइत्ति ॥ ४ ॥

| | | |
|---------------------------------------|---|---|
| उगगभे सूरें = सुखोदयमे पहले | पञ्चक्याण = पञ्चक्याण मे उगगभे सूरें = सुखोदय से पहले | पुरिम = पुरिमइत्त मे अम्भतट्ट = उपवास मे पञ्चक्याणइ = पञ्चक्याण |
| नमो = नवकारसी मे पोरिसि = पोरसी के | सूरें उगगभे = सुखोदय होने पर | त्ति = ०से |

अर्थ

१ नवकार सी मे उगगसूरें नमुक्कार सहिय २ पोरिसी (साठपोरिसी) के पञ्चक्याण मे उगगसूरें पोरिसिय पञ्चक्याणमि० ३ पुरिमइत्त (अवइ) म सूरें उगगभे पुरिमइत्त पञ्चक्याणमि ४ उपवास मे सूरें उगगभे अम्भतट्ट पञ्चक्याणइ उपवास चार विधिकही

विवेचन-जो सुखोदय पहले 'नवकारसहिय' आदिपञ्चक्याण प्रमाद बचानही की या हो तो भी पुरिमइत्त अकामणा आवधिल और उपवास आदि बडा पञ्चक्याण हो सकते है इमी तरह आत्र के सुखोदय से आवती काल के सुखोदय तक का पञ्चक्याण उपवास कह लाता है रात का चोविहार कीया हो तो प्रमातें 'चौयमत्त' का पञ्चक्याण हो सकते है और

विहार किया है तो 'अभक्तदूठ' काही पञ्चक्याण होना है बाकी भाग्ये और पीछे दो अक्षरना और बीच में उपवास करे वो तो 'चोषभक्त' का खुसी से पञ्चक्याण कर सकता है ।

दूसरी प्रकारसे भी ४ प्रकारके विधि

भणइ गुरू सीसो पुण, पञ्चक्या मिच्छि एव चोसि राइ,
उव ओगित्य पमाण नपमाण वजणच्छलणा ॥ ५ ॥

| | | |
|-------------------------|-------------------------------|-----------------------------------|
| भणइ = कहना | मिच्छि = इस प्रकार कहे | पमाण = प्रमाण |
| गुरू = गुरू | अत्र = इसी तरह | न पमाण = प्रमाण रहित (अप्रमाण) |
| सीसोपुण = शिष्यभी | वोसिरइ = बोसराना (त्यागना) | वजण = अक्षर की |
| पञ्चक्यामि = पञ्चक्यामि | उपओग = उपयोग | च्छलणा = भूल |

अर्थ

गुरू पञ्चक्याइ कहे तत्र शिष्य पीछा पञ्चक्यामिऐसा कहे, इसतरइगुरू वोसिरइ कहे तत्र शिष्य वोसिरामि कहे यहाँ पर उपयोग ही प्रमाण है परंतु अक्षर कि भूल पञ्चक्याण व पाठ देने में हो वो प्रमाण रूप नहीं है

एकासनादि पञ्चमत्याणके पाच उच्चार स्थान

पठमे ठाणे तेरस धीए तिच्छिउतिगाइ तइअमि
पाणास्सचउत्थमि, देसवगासइ पचमए ॥ ६ ॥

नमुपोरिमि सइहा पुरिमउइह अगुट्टमाइ अडतेर
निविधिगइविल तिय तिय, दुइगासण एगठाणाइ ॥ ७ ॥

(१) रात्रिका सोविहार करनेवाले को चउत्थ भक्तका पञ्चक्याण लिखा उभने लिये मतभेद है अतएव शानी कहे सो प्रमाण

पठमे षण्णे = पहले स्थान में
 तेरस = तेरहा
 बीजे = दूसरे स्थान में
 त्रिंशुड = तीन, पीर
 विगाड = तीन
 त्र ओमि = तीजे स्थानमें
 पाणस = पाणी के छ
 आगर
 चहत्थमि = चौथे स्थानमें

देसकाल = ...
 पवन ने = ...
 ननु = ...
 परिच = ...
 सद्वा = ...
 पुरिन = ...
 अन् = ...
 अगुट्ट = ...

३

पहले स्थान में तेरा पञ्चक
 पीर तीन, चौथा स्थान में
 विगासिक आदि (पाणहार
 (सूर्योदय से ४८ मिनट
 (दोड प्रहरनाद) पुरिमस
 अगुट्ट सहिय आदि आठ
 तीन, बियासगा ओकासना
 और पांच में स्थान में

उपवासादि पञ्चक
 पठममिचउत्तरार
 देसवगास तुरि

पण
 ३
 का

| | | |
|------------------------|---------------------------|-------------------------|
| पठममि = पहले स्थान में | बीर्यमि = दूसरे स्थान में | तुरिभे = चौथे स्थान में |
| चउःयाइ = चउःय भक्त | तइय = तीजे स्थान में | चरिमे = दिनके अत में |
| आदि | पाणस्स = पाणी के | जइ संभव = यथा संभव |
| तेरस = तेरह (१३) | देशयगासं = देशावगासिक | नेय = जाणना |

अर्थ

पहले स्थान में चउःयभक्त (१ उपवास) से चोतीसभक्त (१६ उपवास) तक दूसरे स्थान में नमुक्कारसी आदि तेरहा तीसरे स्थान में पाणी छआगार चौथे स्थान में देशावगासिक, दिनके अत में यथा संभव (चर विहार, पाणहार, देशावगासिक) समझना

मौनसा पाठ पञ्चकखणमे नही बोलना

तहमज्ज पच्चक्खणेषु न पिहु सुरुग्गयाइ वोसिरइ
करणविहिउनभाइ, जहायसीयाइ बिअ छदे ॥ ९ ॥

| | | |
|------------------------|----------------------|------------------------|
| तइ = उसी प्रकार | सुरुग्गयाइ = सुय उगे | जहा = जैसे |
| मज्ज = मध्यका | आदि | आवसीयाइ = आवसि |
| पच्चक्खणेषु = पच्चक्खा | वोसिरइ = वोसिरइ | आअे |
| णोमे | करण विहि = करने कि | बिअछदे = दूसरे वादनेमे |
| नपिहु = अलग अलग | विधि | |
| नही करना | नमज्ज = नही कहा है | |

अर्थ

इसी तरह मध्य के (नीवि, विगइ, आचिल, अेकासणा बीपासणा, अेकल टाणा ओर उपवास के पञ्चक्खण में सूरु उग्गअे आदि (उग्गे सूरु) और वोसिरइये पद अलग अलग (बारबार) न कहने करने का विधि नही कही है जैसे ' आवसिआअे ' यह पद दूसरे वादणा में नही कहा जाता है

प्रागुक्त पाणीके छ आगार किसकी कहना

तदतिविह पञ्चगवणे भ्रष्टंति अपाणगम्भ आगार
दुविहारे अविष्ट, यादृणो महयवस्तु जले ॥ १० ॥

| | | |
|----------------------|---------------------|----------------------|
| तद = जले (इसी तरह) | पञ्चगम = पानी के | अविष्ट भ्रष्टो = |
| तिविह = त्रिविहार के | आगार = छ आगार | अविष्ट गानकले को |
| पञ्चगवणे = पञ्चगवण | दुविहारे = दु विहार | तद = जेने |
| | में बाले को | प्रागुक्ते = गम विदा |
| भ्रष्टंति = बहते है | | दुपा पाणी बाले को |

अर्थ

इसी तरह (अर्थात्तः) त्रिविहार के पञ्चगवण में पानी के छ आगार
कहते है अविष्ट गानकला, अर्थात्तः दुविहारकला और प्रागुक्त
(अर्थात्) पानी पीनेकाला का (पानी के छ आगार) कहना

विशेषतः = (१) अविष्ट गानकला और अविष्ट पानी पीने काले को
पञ्चगवण का आगार कहना (२) अविष्ट गानकला और अविष्ट पानी पीने
काले को पञ्चगवण का आगार कहना (३) अविष्ट गानकला और अविष्ट
पानी पीनेकाले को पञ्चगवण का आगार नहीं कहना (४) अविष्ट गानकला
और अविष्ट ही पानी पीनेकाले का पञ्चगवण का आगार नहीं कहना ।

प्रागुक्त पाणी कौनसे पञ्चगवणमें लेना

इतिविहपञ्चगवणे विन्व, निविहारास्तु प्रागुक्तं विष्य जलम्
मदुविहारे विष्यति तदा पञ्चगवणि य त्रिविहार ॥ ११ ॥

| | | |
|------------------------------------|---------------------|----------------------------|
| इतिविह = इसी सीधे | प्रागुक्तं = अविष्ट | विष्यति = पीने है |
| जलम् = जल | विन्व = निवन्व | तदा = इसी प्रकार |
| मदुविहारे = अविष्ट | पञ्चगवणि = पञ्चगवण | |
| निविहारास्तु = निविहारे, तद = जेने | | य त्रिविहार = त्रिविहार का |
| में तदुक्तं = अविष्ट है | | |

अर्थ

इसी वास्ते उरवास आबिन और निविआदि (अकासना) मे निचे अचिस पाणी पीर भावक भी पीते है उसी तरह तिविहारका भी पचकत्वाण करते है

साधु और श्रावकको कौनसा पचकत्वाण किस प्रकार करना उसके लिये

चउहाहार तु नमो, रत्तिपि मुणीणमेस तिह चउहा
निसि पोरिसि पुरिमगासणाइ, सह्दाणदु ति चउहा ॥ १२ ॥

| | | |
|---|------------------------------|--|
| चउहाहार = चोविहार (चारों प्रकार का आहार) | तिहचउहा = तिविहार चोविहार | सह्दाण = भावको को दुतिचउहा = दुविहार ति विहार और चोविहार |
| दु = फिर (और) ही | निसि = रात्रिका | |
| नमो = नवकारसी | पोरिसि = पोरसी | |
| रत्तिपि = रात्रीका भी | पुरिम = पुरिमदु | |
| मुणिण = साधुको | अगासणाइ = अकासना | |
| सेस = दूसरा को (बाकी रहे हुवे को) | आदि | |

अर्थ

साधुओको नवकारसी और रात्रिका पचकत्वाण भी चोवीहारही होते है और बाकी (पोरसी आदि) का तिविहार और चोवीहार होते है भावकोको रात्रिका पचकत्वाण पोरसी पुरिमदु और अकासनादि दुविहार तिविहार और चोविहार (इस तरह तीन प्रकार) होते है

चार प्रकार के आहारका तीसरा द्वार

(१) एकासानादि म जो दुविहार पचकत्वाण कहा है वो बहुत बड़ा कारण होनेपर है अन्य तो तिविहार चोविहार होता है

आहारका लक्षण

खुह-पसमखमेगागी-आहारिव एइ देइ वासाय
खुहिओउ गियइ कुदुठे ज प कुचम तमाहारो ॥ १३ ॥

| | | |
|-----------------------------|----------------------------|-------------------------------|
| खुह = खुषाको (मुग्गको) | आहारिव = अथवा (आहारम) | खुहिना = खुषामला (मुग्ग) |
| पसय = दवान मे | ओइ = आवे | खिवइ = नाखे डाने |
| सम = समर्थ | देइ = देवे | कुदुठे = उदरमे (पेटमे) |
| अगागी = एकाकि (अनेना) | वा = अथवा | अ = जो |
| | साय = स्वाद को | पमुचय = कादेबेसा |
| | | त = वो पदार्थ |
| | | आहारो = आहार |

अर्थ

१ खुषाको दवान मे समर्थ एसा एक द्रव्य (चावल विगेरे) या २ आहारमे आवे या ३ आहारमे स्वाद नेता हो (लून वगेरा) या ४ मुल (मुग्ग दवाने वास्ते) कादा जैसे पदार्थ को पेटमे डाल उसे आहार केहना (जैसे मिट्टि)

कौनमी कौनसी चीज आहार और पानीमे गीनी जाती है

असणे मुग्गोयण-सनु मड पय खज रव्य कदाइ
पाणेकजिय जव कयर ककडोदग सुराइ जल ॥ १४ ॥

| | | |
|-----------------------------|--------------|------------------------|
| असणे = अशन मे (आहारमे) | पय = दूध | जव = जव का पाणी |
| मुग्ग = मुग्ग | खज = लाजा | कयर = केर का पाणी |
| ओयण = चावल | रव्य = राव | ककडोदग = काकडी का पाणी |
| सनु = कसार | कदाइ = कदादि | सुराइजल = मदिराआदि |
| मड = रोटी पुदी आदि | पाणे - | आठ का |

अर्थ

अशनमे = १ मुग २ चावल ३ कसारा ४ पुडिरोटी आदि ५ दूध ६ खाजा (मीठाइ) ७ राब और ८ कदआदि यह आठही अशनमे गीने जाते है

पाणीमे = छाल की आछ, जगका पाणी, केरका पाणी, काकडीका पाणी, और मदिरा (दारू) विगरका पाणी

खादीम स्वादीम और अनाहारी वस्तु

खाइमे भत्तोस फलाइ, साइमे सुठि जीर अजमाइ
महु गुड तबोलाइ, अणाहारे मोय निवाइ ॥ १५ ॥

| | | |
|----------------------|-------------------|---------------------|
| खाइमे = खादिममे | जीर = जीरा | तबोलाइ = पान विगेरे |
| भत्तोस = सेकाहुवाधान | अजमाई = अजमादि | अणाहारे = अणहारीमे |
| फलाइ = फल विगेरे | महु = मघ (शब्द) | मोय = मूत्र |
| साइमे = स्वादिमम | गुड = गुड | निवाइ = निम विगेरे |
| सुठि = सुठ | | |

अर्थ

खादिममे सेकाहुवाधान और फलादि स्वादिममे सुठ जीरा अजमादि शब्द गुड ओर तबोल (पानादि) विगेरे अणहारी (जो वस्तु खानेमे अनिष्ट तुरी या कड़वी स्वाद कि होवो) मे सब जात के मूत्र और नीम (के पते फल, छाल, लकड़ी) विगेरे

विचेचन

रात के चोविहारवाले कारण होनेपर जो अणहारी वस्तु ल सब उन के नाम नीम के अग (पते, छाल, लकड़ी फल फुल विगेरे) गोमूत्र विगेरे मूत्र, गीलोय कडवा करियातु चीमइ राग उरलटे वज्र हरडे वदेडा आवला बबुल कि छाल घमासो आसंधी चंन बैलीयो गुगल, बोरडी, कयेरी बेलमुल पुआड मजीठ चित्रक वोल कुदरू फटकडी घुवर आकडा अथवा जो वस्तु खाने मे खराब स्वाद वाली हो अफीण विगेरे बुजगर जेरीखोपरू

अब कस्तुरी रूमी मस्तकी खेरसार दाढम की छल भीम सेनी कपुर अलि
विष की कली वषमी चणिकबाव केशर जेरी गोटली, बडी हीमज
कोयदन आदि विशेष गुरु गम से समझना

नवकारसी आदिके आगारोकी सख्या का चोथा द्वार

दो नवकारि छ पोरिसि सग पुरिमुद्धे इगासणे अट्ट
सत्तेगठाणि अत्रिलि अट्ट पण चउत्थि छापाणे ॥ १६ ॥

| | | |
|-------------------------|----------------------|---------------------|
| दो = दो आगार | इगासणे = अेकसगाका | अत्रिलि = आत्रिन का |
| नवकारी = नवकारसी क | अट्ट = आठ | अट्ट = आठ |
| छ = छ (६) | सत्त = सात | पण = पांच |
| पोरिसि = पारसी क | इगठाणि = अेकलटाणा का | चउत्थि = उरवास का |
| सग = सात | | छापाणे = पाणी का छ |
| पुरिमुद्धे = पुरिमड्डका | | |

अर्थ

नवकारसी के ११ आगर, पोरसी के छ आगार, पुरिमड्ड का सात अकास
नाका आठ अगार, अेकल टाण का सात और आंबील का आठ, उरवास का
पांच, और पाणी का छ आगार ह

चउ चरिमे चिउभिग्गहि पण पावरणे नवट्ट निचीत्रे
आगारु कस्सित्त विवेग मुत्तु दवविग्गइ नियमिट्ट ॥ १७ ॥

| | | |
|------------------------------------|---------------------|----------------------------|
| चउ = चार | पण = पांच | पित्त विवेगेण |
| चरिमे = दिन के अतक (रात्रिके) | पावरणे = चोलपटा का | मुत्तं = छोडकर |
| चउ = चार | नवट्ट = नव और आठ | दव विग्गइ = ब्रधन्य नीविमे |
| अभिग्गहि = अभिग्रह के | निचीत्रे = निचीत्रा | |
| | आगार = आगार (रुग्) | नियमि = निधे |
| | उक्खित विवेग = उक्- | अट्ट = आठ |

अर्थ

दिवक्चरिम (चउविहार तिविहार और दुविहार) के चार, अभिमह के चार आगार, चाल पट्टा छोड़ने का पाच, और निवि के नव (जघन्य मे) आठ (उत्कृष्ट मे) उकृषित विवेगेण' आगार को छोड़कर जघन्य मे निश्चे आठ आगार है।

नक्कारसी पोरिसी साढपोरिसी पुरिमद्द और अवद्द के आगार

अन्न सह दुनमुकारे, अन्नसहपच्छदिस य साहु सव ।
पोरिसि छ सद्द, पुरिमद्देसत्त समहत्तरा ॥ १८ ॥

| | | |
|----------------------|---------------------|---------------------------|
| अन्न = अन्न यणाभोगेण | पच्छ = पच्छत्तसालेण | छ = छ |
| सह = सहसा गारेण | दिस = दिसामोहेण | सद्द = दोढ पोरिसीका |
| दु = दो आगार | साहु = साहुवयणेण | पुरिमद्दे = दो पोरिसी में |
| नमुकारे = नक्कारसीमे | सव = सव समाहि | सत्त = सात |
| अन्न = अन्नयणा भोगेण | वत्तियागारेण | समहत्तरा = महत्तरा |
| सह = सहसा गारेण | पोरिसी = पोर्सि | गारेण सहित |

अर्थ

अन्नयणा भोगेण और सहसागारेण ये दो आगार नक्कारसी मे अन्नयणा भोगेण सहसा गारेण पच्छत्त सालेण दिसामोहेण साहुवयणेण सव समाहि वत्तिया गारेण ये छ आगार पोरिसी और सात् पोरिसी के है

उपर के छ आगार को महत्तरा गारेण सहित करे तो परिमुद्दे मे सात आगार है

अकासना वियासणा और अकल्लठाने के आगार

अन्न सहस्सागारि आउटण गुरू अपारि मह सव्व ।
अग वियासणि अट्टउ सग इगठाने आउट विणा ॥ १९ ॥

| | | |
|------------------------|------------------------|--------------------|
| अप्र = अन्नपत्रा भोगेन | पारि = पारिटापनिका | अट्ट = आठ |
| सह = साहाय्यगारेण | गारेण | सय = सात |
| सागारि = सागारिया | मह = महत्तरागारेण | इगठणे = अकलठणे में |
| गारेण | सम्ब = सम्बन्धमाहि | आउट = आउटण पत्रा |
| आउटण = आउटण | वत्तिवा गारेण | रेण |
| पकारेण | अेग = अेकसणा | दिग = दिना |
| गुरूअ = गुरू अ-मुट्टा | दिश्रासणि = दिश्रसनामे | |
| जेण | | |

अर्थ

अन्नपत्र भोगेन सहसा गारेण सागारियागारेण आउटण पकारेण गुरू अ-मुट्टा टाणेण, पारिटापनिकागारेण, महत्तरागारेण सम्ब सम्बन्धवत्तिवा गारेण अेकसणा और दिश्रसणा में आठ भागर उठमें से आउटण पकारेण दिना अेकल ठाणे में सात भागर

विगइनिदि और आचील के आगर

अप्र सह लेवा गिह उट्टुगिन पडुच्च पारिमह सय ।

विगइनि दिवगइनय पडुच्चविणु अविसे अट्ट ॥ २० ॥

| | | |
|------------------------|----------------------------|-------------------------|
| अप्र = अन्नपत्रा भोगेन | पडुच्च = पडुच्चमइखिरण | निविगइ = निवि मे |
| सह = साहाय्य गारेण | पारि = पारिटापनिका | नर = नव |
| लेवा = लेवा लवेन | गारेण | पडुच्च = पडुच्चमकेसिअेण |
| गिह = गिहःय संसट्टेण | मह = महत्तरागारेण | |
| उट्टुगिन = उट्टुगिन | सम्ब = सम्बन्धमाहि वत्तिवा | विणु = विना |
| विवेगेण | गारेण | अंविन = अविनमे |
| | विगइ = विगइ | अट्ट = आठ |

अर्थ

अन्नपत्रभोगेन, सहसागारेण लेवानेवेण गिहय संसट्टेण, उट्टुगिन विवेगेण पडुच्चमइखिरण पारिटापनिका गारेण, महत्तरागारेण सम्ब सम्बन्धवत्तिवागारेण, विगइ और निविमे नव (अगर) पडुच्चमइखिरणेण विना अविनमे आठ आगर।

उपवास, पाणि और अभिग्रहादि के आगार

अन्न सह पारिमह सव्य पञ्चपत्रणे छपाणि लेवाइ
चउ चरिमगुट्टाइ भिग्गाहि अन्न सह सह सत्र ॥ २१ ॥

| | | |
|-------------------------|------------------------|-----------------------|
| अन्न = अन्नार्थगत भोगेण | पच = पाच | आदि |
| सह = सहसा गारेण | स्वप्ने = उपवास मे | अभिग्गाहि = अभिग्रहमे |
| पारि = पारिष्ठा वणिया | छपाणि = पाणस्त वे छ | अत्र = अन्नार्थ भोगेण |
| गारेण | लेवाइ = लेवेणवा विगेरे | सह = सह सागारेण |
| मह = महत्तरा गारेण | चउ = चार | मह = महत्तरा गारेण |
| सत्र = सव्यसमाहि वत्ति | चरिम = दिवस चरिम | सत्र = सव्य समाहि |
| या गारेण | अगुट्टाइ = अगुट्ट सहि | वत्तिया गारेण |

अर्थ

अन्नार्थभोगेण, सहसागारेण, पारिष्ठावणियागारेण महत्तरागारेण और सव्यसमाहि वत्तिया गारेण, ये पाच आगार उपवास मे और लेवेणवा आदि छ आगार पाणस्त (पाणी क) दिवस चरिम अगुट्ट सहि आदि पञ्चपत्रणे और अभिग्रह मे चार आगार अन्नार्थभोगेण, सहसा गारेण, महत्तरागारेण सव्य समाहि वत्तिया गारेण ।

दश विगई मे से द्रव्य और पिंड विगईओ के नाम

दुद्ध महु मज्ज तिल चउरो दय विगई चउरो पिड्दवा,
छय गुल दहिय पिसिय मक्खण पक्कन्न दो पिडा ॥ २२ ॥

| | | |
|-----------------------|-------------------|----------------------------|
| दुद्ध = दूध | चउर = चार | पिसिय = मांस |
| महु = मध (शहद) | पिड्दवा = कठोर और | मक्खण = मक्खन |
| मज्ज = मदिरा (दारू) | नरम | पक्कन्न = पक्वान (मिठाई) |
| तिल = तेल | धय = धी | दो = दो |
| चउरा = चार | गुल = गुड़ | पिडा = कठोर |
| दय विगई = नरम विगई | दहिय = दही | |

अर्थ

दूध, मध, (शहद) मदिरा और तेल यह चार नर्म विगई है (जिसका रेलाचेल) धी गुड़, दही और मांस यह चार कठोर और नर्म है मक्खन और पक्वान यह दो कठोर है

पञ्चकखाण के आगारो कि संख्या का यत्र कि स्थपना

| अक्र | पञ्चकखाणो के नाम | संख्या | आगारो के नाम |
|------|------------------|--------|---|
| १ | नवकारसी | २ | अन्न सह |
| २ | पोरिसी | ६ | अन्न सह पञ्चल दिसामो साहु सन्व |
| ३ | सादपोरिसी | ६ | अन्न सह पञ्चल दिसामो साहु सन्व |
| ४ | परिमुहु | ७ | अन्न सह पञ्चल दिसामो साहु महत्त सन्व |
| ५ | अवहु | ७ | अन्न सह पञ्चल दिसामो साहु महत्त सन्व |
| ६ | अेकासना | ८ | अन्न सह सागा आठ गुरु पारि मह सन्व |
| ७ | भियासना | ८ | |
| ८ | अेकलठाणा | ७ | अन्न सह सागा गुरु पारि मह सन्व |
| ९ | नीब | ९ | अन्न सह लेवा गिहःय उक्खीत पहुन्व पारि महत्त सन्व |
| १० | विगड | ९ | |
| ११ | आंभिल | ८ | अन्न सह लेवा गिहःय उक्खीत पारि महत्त सन्व |
| १२ | उपवास | ६ | अन्न सह पारि महत्त सन्व चोलपट्टा (यति के वास्ते) |
| १३ | पाणहार | ६ | लेवे अले अ-छे बहु ससिःय असिःय |
| १४ | आभमह संकेत | ४ | अन्न सह मह सन्व |
| १५ | दिवसचरिम | ४ | |
| १६ | भवचरिम | ४ | |
| १७ | देशाविगाशिक | ४ | अन्न सह मह सन्व |
| १८ | समकित | ६ | साया गणा देवा गुरूनी विन्ति |

त्रितनेक पचकखाण के परसपर एक सरिखे पाठ और आगार

पोरिसि सइड अवइड दुभत्त निविगइ पोरिसाइ सया
अगुट्ट मुट्टि गठी सचित्त द वाइ भिग्गहिय ॥ २१ ॥

| | | |
|------------------|---------------------|----------------------------------|
| पोरिसी = पोरसी | पोरिसाइ = पोरसी आदि | गठी = गठी सहिय |
| सइड = साधपोरसी | सया = एक सरखे | सचित्त द वाइ = सचित्त द्रयादि |
| अवइड = अवइड | अगुट्ट = अगुठसहिय | अभिग्गहिय = अभिग्रह |
| दुभत्त = धीयासना | मुट्टि = मुट्टिसहिय | |
| निविगइ = नीवि | | |

अर्थ

पोरसी और सा पोरसी के एक सरखे ६ आगार है पुरिमार्थ और अवइड के एक सरखे ७ आगार है, एकासना, त्रियासना के सरखे ८ आगार नीवि और त्रिगइ के सरखे ९ आगार अगुठ सहिय मुट्टिसहिय, गठिसहिय सचित्त द्रयादि के पोरसी आदि के सरखे आगार है (देशावगासिक और द्रय क्षेत्रादिक) और अभिग्रह के एक सरखे चार आगार है

बावीस आगारो मा अर्थ चार गाथा कर के कहते है

विस्सरण मणाभोगो सहसागारो सय मुँह पवेसो
पच्छन्न काल मेहाइ, दिसि विवज्जासु दिसिमोहो ॥ २४ ॥

| | | |
|-------------------------|---|--|
| विस्सरण = भुलजाने से | सय = स्वय (अपन आप) | मेहाइ = वर्षादि के कारण |
| अणाभोगो = उपयोग बगर | मुँह पवेसो = मुह मे प्रवेश | दिसिविवज्जासु = दिशा का फेरफार हाने से |
| सह सागरो = अक्समात कारण | पच्छन्न काल = टका हुआ समय (सूर्यादिके कारण) | दिसि मोहो = दिशी मे मोह |

अर्थ

बीना उपयोग के भुल जाने के कारण कोई वस्तु मुह मे ढाली जाय वो, अक्षय भोगेण । अपने आप अक्समात कोई वस्तु मुह मे चली जाय वो सह

सागरेण, वर्षादि के कारण सूय टुक आने से समय के पूरा न होने के पहले भाजन करे वो पच्छत्र कालेण । आंधी वगेरे क कारण दिशा का फेरफार होने से दिशा मे मोह हो जाने के कारण मालूम न पड़े वो दिशा मोहेण ।

साहु वयण उग्घाडा पोरिती तणु सुस्थया समाहित्ति
सधाइ कज महत्तर गिट्थ यदाइ सागारी ॥ २५ ॥

| | | |
|--|---|------------------------------------|
| साहु वयण = साधु के वचन | समाहित्ति = समाधि (संघ समाधि वत्तिया गारेण) | गिट्थ = गृहस्थ यदाइ = चारण, भाट |
| उग्घाडा पोरिती = बहु पढीपुछा पोरिती | सधाइ कज = संधादि के काय | सागारी = सागारिया गारेण |
| तणुसुस्थया = शरीर की स्वस्थता | महत्तर = महत्तर गारेण | |

अर्थ

(छ षड्गीर) बहु पढि पुछा पोरिती एसा साधु के वचन मुनकर जो पोरितीशले वो साहु वयण आगार, शरीर कि स्थयता (रोग की शांती) तथा समाधि करन वास्ते पाले वो संघ समाधि वत्तियागारेण, यद्दो की आशा से, संधादि क काय हेतु जो पञ्चक्याण पालना पड़े उसका नाम महत्तर-गारेण आगार, गृहस्थया चारण भागादि कि दिष्टि लगने क कारण से अकसना दिमे उन्नावड, पाणी की रल घरका पहनादि ग्राह कारण पर उन्ना पड़े वो सागरियागारेण आगार

आउटण मगाण गुरू पाहुण साहु गुरू अभट्टाण
परिहायण विहिगहिअे, जइण पावरणि कडिपट्टो ॥ २६ ॥

| | | |
|---------------------------------------|--|--------------------------------|
| आउटण = सीपुइना (आउटणपसारण) | गुरू अभट्टाण = गुरू अभट्टाणेण (गुरू के आने पर रतकाराय गदा होना) | विहिगहिअे = विधिसे सीपाहुवा |
| अगाण = अगोकर | परिठायण = परठन योग्य (पारिठावणियागारेण) | जइण = यतिको |
| गुरू = बडा, गुरू | | पावरणि = बख छोडने को |
| पाहुण साहु = बडा साधु (पूज्य साधु) | | कडिपट्टो = पालवटा |

अर्थ

हाथ पगारि अंगो को सिकुइना वो आउट पसारेण आगर, गुरूया बड़े साधु पघारे तब उनका विनय सत्कार परन को ओसासनादि मे राहा होवे उसको गुरू अब्मुदृठार्णेण आगर कहते हैं। विधिषदित लिया हुआ आहर परठने योग्य हो उसको गुरू कि आज्ञा से लेना उरका नाम पारिठारणिया गारेण आगर। यनि साधु को वर्र छोड़ने के पचकत्वाग म चोलपट्टागारेण आगर (त्रितेंद्रिय मुनि अभिप्रह के कारण अगर वर्र बीना बैठे हो और उसी समय गृहस्थ आवे तो शीघ्र चोलपट्टा पहरेले)

खरदिय लूहिय बोवाइ लेवससदृठदुच मडाइ
उक्खित्तपिंड विगइण मक्खिय अगुलीहिंमणा ॥ २७ ॥

| | | |
|---------------------|----------------------|------------------------|
| खरदिय = लगी हुई | (गिरह-पसंसेदृठेण) | पिंडविगइण = कठोर |
| लूहिय = पुछी हुई | दुच = शाग | विगइ को |
| बोवाइ = बुरुछी वगेण | मडाइ = मांदादि | मक्खिय = मसला हुआ |
| लेण = लेवा लेवेण | उक्खित्त = उठाया हुआ | (पदुच मक्खिअण) |
| संसदृ = संस्कारित | (उक्खित्त विविगेण) | अंगुलीहिं = अंगुलियोसे |
| | | मणा = कुच्छ |

अर्थ

नही लेने योग्य वस्तु कुइछी पर लगी हो उसे पौठ कर जो आहार लीया हुआ प्रदण करे तो साधु को (आयभिल ओर नीवि) का भग नही होवे वो लेवा लेरण आगर, शाक मांदा आदि की घी तेल से संस्कारित कीया हो वो उस मुनिको (नीवि आदि से) भग न होय उसको गिरहय संसदृठण आगर करते है रोटी पर से कठोर विगय पडि हुई को गृहस्थ उठाकर देवे वो रोटी को लेते हुवे साधु को (नीवि आदि का) भग न हो वो, उक्खित्त विवेगेण आगर। कुच्छ घी आदि कि अगुलियां से कणी मसली हुई होवो ले ते मुनिको (नीवि आदि) भग न हो उसको पदच्चमक्खिअण आगर करते है।

लेवाड आयामार इयर सो घीर मच्छ मुसिणजल ।

घोअण बहुल ससित्थ उस्से इम इअर सित्थ विणा ॥ ३८ ॥

| | | |
|-------------------------|--|-----------------------|
| लेवाड = लेपलगाहुवा | अच्छ=शुद्ध (अच्छेणवा) | संसित्थ = दाणा (धान) |
| आयामाड = ओसामणादि | उक्षिण बल = गर्म पानी | सहित = ससित्थेणवा |
| इयर = चीना लेप लगा हुवा | घोअण = चावल का धोवण | उत्तमम = आगवाला |
| | | इअर = असित्थ |
| सोवीरं = छाशकिआउ कांजी | बहुल = बहुत लेप लगा हुवा (बहु लेवेणवा) | (असि येणवा) |
| | | सित्थविणा = दाणा चीना |

अर्थ

ओसामणादि (दाण आंबली) लेप लगा हुवा (बतन में लेप लगा हुवा हो वो) पाणी को लेवेण वा आगार कांजी (छाश कि आउ) का पाणी को बिना लेप लगा हुवा वो अलेवेण वा आगार, चीन उकाले से गर्म किया हुवा शुद्ध पाणी वो अच्छेणवा आगार, चावलदिके धोवण का पाणी जो बहुत लेप लगा हो उसे बहुलेवेणवा आगार, दाणायुक्त या आटे के रजकण युक्त पाणी वो ससि येणवा आगार दाणा वा आटे के रजकणयुक्त पाणी को बल से छाणा हुवा हो वो असि येणवा आगार

छमक्ष विगइ के २१ उच्चर भेद

पण चउ चउ चउ दु दुयिह छमक्ख दुद्धाइ विगर इगरीसं
तिदुति चउयिह अमफखा चउ महु माइ विगइ यार ॥ २९ ॥

खीर घय ददिअ तिल्लं, गुडपफन्न छमक्ख विगइ ओ
गो महिस्ती उट्टिअय, अलगाण पण दुद्ध अदच उरो ॥ ३० ॥

घय ददि भा उट्टि विणा तिलसरसयि अयसिलट्ट तिल्लचउ
दय गुड पिंड गुडा दो पफन्नं तिल्ल घय तलिय ॥ ३१ ॥

| | | |
|------------------------|-----------------------|-------------------------|
| ण चउ = पांच, चार | खीर घय = दूध घी | घय = घी |
| वउ चउ = चार चार | दहि तिल्ल = दही, तेल | दहि-ना = दही |
| दु दु विह = दो दो | गुड = गुड | उट्टि विण = उट्टी बिना |
| प्रकार से | पकन्न = पकवान | तिल = तिलका |
| छमकण = छमकण | छमकण = छमकण | सरिसण = सरमुका |
| दुदाइ = दुदादि | विगइ ओ = वीगइ | अयसि = अलसी का |
| विगइ = विगय | गौ महिरी = गाय और | सट्ट = खसपस का बैसा |
| इगाविसं = इकविश | भैंस का | कुमुभीका |
| ति दु ति = तिन दा तिन | उट्टिअय = उट्टी और | तिल्ल = तेल |
| चउ विह = चार प्रकार से | बकरी का | चउ = चार |
| अमकण = अमकण | अलगाण = घेंटी का | दव गुड = पीगला हुआ |
| चउ = चार | चउ रो = चार प्रकार से | गुड |
| महुमाइ = मध (शहदादि) | | पिड गुडा = कटोर गुड |
| विगइ = विगइ के | | दो = दो |
| चार = चारद | | पकन्न = पकवान |
| | | तिल्ल = तेल में तला हुआ |
| | | घय = घी में |
| | | तलिय = तला हुआ |

अर्थ

दूध पांच प्रकारका, घी चार प्रकारका दही चार प्रकारका तेल चार प्रकारका गुड दो प्रकारका और पकवान से प्रकारका इततरह छ भक्ष दूधादि विगइ के २१ भेद है। मध (शहद) तीन प्रकारका, मदिरा दो प्रकारका, मास तीन प्रकारका और मक्खन चार प्रकारका इस प्रकार मधादि चार अमकण विगइ के २२ भेद है दूध, दही, घी तेल, गुड, और पकवान यह छ भक्ष विगइ है। गाय भैंस, उट्टी बकरी और घेंटी का इस प्रकार से दूध पांच प्रकार का है। घी और दही उट्टी को छोड़कर चार प्रकार का है। तीलीका, सरमुका अलसीका और कावरीकुमुभी का इस तरह चार प्रकारका तेल कि विगइ है

(बाकि मुगफली का, खोपरेल का, और कपासिया का तेल विगइमे नही गीना जाता है) (१) नरम और कठोर इसप्रकार दो तरह का गुड़ कि विगइ है । तेल में और धीमे तला हुआ इस तरह दो प्रकार का पकवान कि विगइ है ।

दूध के पाच नीवियाता

पयसाडि खीर पय घलेहि दुद्धट्टि दुद्ध विगइ गया ॥

दकन बहु आप तदुल तच्चन्निल सहिअ दुद्धे ॥ ३२ ॥

| | | |
|-------------------------|---------------------|-----------------|
| पयसाडि = बामुनी | विगइ गया = निवियाता | तच्चुना = उपका |
| खीर = खीर | दकन = दान | (चावल का) आग |
| पेया = दुधपाक | बहुअप = ज्यादा और | अबिलसहिअं = एगस |
| अबलेहि = कुकरणु (राव) | कम | युस्त |
| दुद्धट्टि = बली | तदुल = चावल | दुद्ध = दुधमे |
| दुद्ध = दुधक | | |

अर्थ

१ बामुनी २ खीर ३ दूधपाक ४ कुकरणु (राव) ५ बली, ये पाच नीवियाता है यह अनुक्रमसे दुधमे गाय ज्यादा या कम चावल, आग और एगस डालने से होता है ।

धी के पाच नीवियाता और दही के पांच नीवियाता

नि मचण विसदण पक्कोसहितरिय किट्टिपकघय

दहिअे करव सिहसिणी मलयण दहि घोल घोलरडा ॥ ३३ ॥

| | | |
|----------------------------------|-----------------------------|--------------------|
| निम्भजग = तला हुआ धी | किट्टि = धी के उर का | सलयण दहि = टूटवहित |
| वीसदण = कुत्तर | मेल (किटा) | दही |
| पक्कोसहितरिय = पकी हुई औषध के उर | पकघय = पकाया हुआ धी | घाल = मया हुआ दही |
| तथा हुआ | दहिअ = दहीमें के करव = करवो | (नत्र) |
| | सिहसिणी = श्रीगड | घोलवण = टूटवडा |

(१) वर्तमान में तो रासकर मुगफलीका तलही प्रयुक्त नही है इसे विगइमे नही मानना शक्य है तब कबली इत्य-

अर्थ

(१) पक्काघ तलने के बाद में रहा हुआ घी, (२) घी या दही की तर के साथ मं बाजरी के भाग और गुड़ से जो बनाया हुआ कुलेर (३) औषध डालकर पकाया हुआ घी के उपर आई तर (४) घी के गर्म करने पर उपर जो मेल आवे वो कीटा (५) औषध डालकर पकाया हुआ पका घी ।
 (१) दही और चावल सामल कर के बघारे वो करवो (२) पाणी विना के दही में सकर डालकर छानकर बनावे वो भीखड (३) लुण (नमक) डालकर हाथ से मथा हुआ दही वो सलवण दही (४) बख से छगा हुआ दही वो घोल (मट्टो) (५) दही छान कर गर्म करके उसमें जो बड़े डाले वो घोलबड़ा (दहीबड़ा)

तेल के पांच और गुड़ के पांचनीवियाता

तिलकुटी निम्भजण पकतिल पकुसहि तरिय तिलमली
 सकर गुलवाणय पाय, खड अघकटिय इक खुरसो ॥ ३९ ॥

| | | |
|--------------------|--------------------|-----------------------|
| तिलकुटी = तलसांकली | पक सहिततरिय = पकाइ | गुलवाणय = गलमाणू |
| निम्भजण = तला हुआ | हुइ औषध के उपर | (राय) |
| तेल | कि तर | पाय = गुड़केचासणी |
| पकतिल = पकाया हुआ | तिलमली = तेल का | खड = खाड |
| तेल | कीटा | अघकटिय = आधा उकला हुआ |
| | सकर = सकर (खाड) | इस खुरसो = साठेका रस |

अर्थ

(१) वील्ली को सेककर गुड़घी की चासणी करके उसमें डालकर जो बनावे वो वील सांकली (२) पक्काघ तलने के बाद में रहा हुआ तेल (३) औषध डालकर पकाया हुआ तेल (४) औषध डालकर पकाया हुआ तेलके उपर जो आवे वोतर (५) तेलको गम करने पर उपर जो मेल आवे वो कीटा । (१) साकर (मिथी) (२) थोड़े आटे को घीमें सेककर

गुड़का पाणी ढालकर बनावे वो गलमाणू (राव) (३) गुड़ कि खासणी करके खाजादि पर चनावे वो गोल की पाय, (४) खांड, (५) आघा उकाला हुवा साठेका रस

कड़ाइ विगय का पांच नीवियाता

पूरिअतय पूआ धीअ पूअ तजेह तुरिअ घाणाइ

गुलहाणी जलल्पसी य पचमो पूत्तिकय पूओ ॥ ३५ ॥

| | | | |
|----------------------------------|--------------------|---------------|-----------------------|
| पूरीअ तय = कड़ाइ भरी | तुरि | अघाणाइ = चोया | पूत्तिकय पूआ = पोताया |
| खाय | | आदि घाण का | (पोता दे कर किया |
| पूआ = पड़ीका पुड़ला | गुलहाणि = गोलघाणी | | हुवा पुड़ा) |
| धीअ पूअ = दुसर पुड़ला | जलल्पसी = जल लापसी | पचमो = पांचमो | |
| तजेह = ते स्नेह (घी या तेल) मे | | | |

अर्थ

(१) घीया तेल से भरी हुई कड़ाइ में पुरे बैसा एक बड़ा पुड़ला के बाद से दुसरे जो पुड़े वो नीवियाता, (२) गरम किया हुवा घी या तेल मे (नया तेल या घी नहीं ढाला हो तो तिनघाण निकलन के पश्चात) चोया आदि घाण नीवियाता (३) गुड़ और घीकि चासणी करके उसमे घाणी नाखे वो गुलघाणी (४) पकवाऊ करने बाद कड़ाइ आदि में चिकट निकलाने को आग को सेक कर गुड़ का पाणी ढाले वो जल लापसी और (५) गुड़घी वगैरा का पोता देकर बनाया हुवा पुड़ा यह नीवियाता है

गिहत्थ ससट्टेण, इस आगार से नीवि मे जो कल्पे वो ससृष्ट द्रव्य.

दुद्ध दही चउरगुल दवगुड घय तिह्ल अेक भत्तुघरिं

पिंडगुल मक्खणाण अदामलयच संसट्ट ॥ ३६ ॥

| | | |
|----------------------|----------------------------|------------------|
| दुद्ध = दूध | अेग = अेक आंगल | अदामलय = छोटे कण |
| दही = दही | भत्तुघरिं = भोजन पर | च = और |
| चउरगुल = चार आंगुल | (चावल पर) | संसट्ट = संसृष्ट |
| दव गुड = नरम गुड़ | पिंडगुल = कठोर गुड़से | |
| घय तिह्ल = घी और तेल | मक्खणाण = मसला हुवा चुरामे | |

अर्थ

चावल पर दूध और दही चार भागुल हो और नरम गुड़, घी और तेल एक अगुल होय वो संसृष्ट द्रव्य कह लाता है। कटोर गुड़ से मसला हुआ बुरमादि में गुड़ के छोटे छोटे कण होय वो संसृष्ट द्रव्य कह लाता है

नीवियात हत द्रव्य और उत्कृष्ट द्रव्य के लक्षण

द्वयहया विगइ विगइ गय, पुणो तेण सह यद्वय
उद्धरिअे तत्तमीय उक्किट्ट दव्व इमचने ॥ ३७ ॥

| | | |
|--------------------------|-----------------------|----------------------------|
| द्वयहया = द्रव्य से नष्ट | त = वो | उक्किट्ट द्रव्य = उत्कृष्ट |
| विगइ = विगइ | हयव = नष्ट हुआ द्रव्य | द्रव्य |
| विगइ गय = नीवियाता | उद्धरिअे = बचा हुआ | इम = यह |
| पुणो = फिर | तत्तमि = तथा हुआ | च = और |
| तेण = उस विगइ से | | अने = दूसरा |

अर्थ

(चावलादि) द्रव्य से नष्ट हुई विगइ वो नीवियाना कहलाता है। फिर वो (दूधादि) विगय से नष्ट द्रव्य वो नष्ट द्रव्य कहलाता है। तलने बाद बचा हुआ या तथा हुआ घी या तेल से कोई द्रव्य बनाया जाय वो उत्कृष्ट द्रव्य कहलाता है इस प्रकार दूसर आचाय कहते है

अच्छा द्रव्य और लगे हुये द्रव्यों के नाम

तिलसक्कुलि वरसोलाइ रायण याइ दक्खवाणाह
डोली तिन्लाइ इअ सरमुत्तम दव्व लेणत्ता ॥ ३८ ॥

| | | |
|-------------------------|---------------------|------------------------------|
| तिलसक्कुलि = तिलसक्कुली | अअइ = आम | आणि = आदि |
| वरसोलाइ = शागोदाआदि | दक्खवाणाइ = दाश का | इअ = यह |
| रायण = रायण | पाणी आदि | सरमुत्तम दव्व = अच्छा द्रव्य |
| | डोली तिन्ल = डोलीया | का तेण लयत्ता = लेप कृत |

अर्थ

तन साकली, शीगोडा (मस और सफ़र के बन हुवे) विगरे । रायग
आमादि फल और द्राक्ष का पाणी विगरे (नारियन का पाणी) डोलीया का
तेलादि ये सब उत्तम द्रव्य है और दूधरा नाम लेर कृत द्रव्य कहलाते है

कारण बिना नीवियाता नही लेनेका उपदेश

विगइ गया ससटा उत्तम द्रव्याइ निवि गइयमि
कारण जाय मुत्त कार्पति न मुत्त ज जुत्त ॥ ३९ ॥

अर्थ

तीस नीवियात, संवृष्ट द्रव्य और उत्तम द्रव्य नीवि मे (शान, श्यान,
तपस्या आदि) दोष कारण (१) को छोडकर खाना नही कलता है । अत एव
कहा है

निवेचन = पहले कहे हुवे छ द्रव्य के नीवियाता साधु को योग बहनादि
और श्रावको को ठरवान कि नीवि मे लबी तरस्या होने के कारण कल्पे
परन्तु कोइ दिन नीवि करे उक्तो तो छ विगइ में से कोइमी विगइ उपर
लकर या बढाकर खाना नही कपे । शीफ विगइ का बरा भा स्पर्श हुआ हो
परन्तु पीछे से जीवाय नही देखन में आवे तो लेना कपे—बैसे (सेहल हुआ
पापड) नीवि मे—कोकम मीचें जीरा पणा, हल्दी बीलोने कि उर्य हींग
मुठ मीरच व लवण आदि कल्पे आधिन मे खाना हुआ छुगा (विगइ

(१) कारण के विषय में जो मुनियोग बहन करे परन्तु शारीरिक सत्ती
न हो लवे समय तक नीवि कि तरस्या चलती हा संयम मे स्थितता आती
हो तो कपे—परन्तु रसना इन्दिरे स्वाद के कारण नीवियाता होते हुवे मी नही
कपे क्योंकि तपस्या तो स्वादिष्ट आहार के त्याग से ही सार्थक है तपस्य
करना और स्वादिष्ट आहार करना यह तरस्या का लक्षण नही है

बिनाका) घान्य दिग सुठ मर्च व लवण कडवा करी यातु लेना कल्पे (२)

बिना कारण से विगइ और नीवियाता राने वाल को फल.

विगइ विगइभीओ विगइगय जो अमुजअे साहु
विगइ विगइ सहावा विगइ रिगइ यलानेइ ॥ ४० ॥

| | | |
|-----------------------|--------------------|--------------------|
| विगइ = विगइ को | भुजअे = खावे | विगइ = विगइ |
| विगइबुरी गति में | साहु = साधु | विगइ = बुरी गति की |
| भीओ = इरता हुवा | विगइ = विगइ | तरफ |
| विगइ गय = नीवियाता को | विगइ सहावा = विकार | बला = अनरदस्ती |
| जो = जो | के स्वभाव वाली | ने इ = ले जावे |

अर्थ

नरकादि नीचगति से इरने वाला साधु उ विगइ को या ३० नीवियाता को खावे तो वो रिगइ विकार के स्वभाववाली होने से अनरदस्ती से नरकादि खराब गति में ल जावे

चार अभक्ष विगइ के १२ उत्तर मेद

बुत्तिय मच्छिअमामर, महु तिहा कट्टपिट्ट मज्ज दुहा
अल थल रग मसतिहा घयव मक्खण चउ अभक्खा ॥४१॥

| | | |
|--------------------------------|-----------------------|----------------------|
| बुत्तिय = बगतराका | पिट्ट = जुगरका भाग | मज्ज = मास |
| मच्छिअम = माखीका (मधुमखी) | मच्च = दारू (मदिरा) | तिहा = तीन प्रकार से |
| मामर = भमराका | दुहा = दो प्रकारसे | घयव्व = धी की तरह |
| महु = मध (शहद) | अल = जल चरका | मक्खण = माखण |
| तिहा = तीन प्रकार से | थल = थल चरका | चउ = चार प्रकार का |
| कट्ट = महुडाका लकड़ा | खग = खेचरका | अभक्खा = अभक्ष |

(२) खरखर गच्छ वाल आंवील में हींग सुंठ मर्च लवण आदि कोई चिन्न नहीं लेते है, सिर्फ लुला अलुगा घान व पाणी ही लेते है

अर्थ

चगतराक माखीक, और ममरा का इस प्रकार से त्रि तर इरर है
महुडा (लकड़ी, पुष्प फुलादि) का और गुवार के आने को इरर रने
वो दारु दो प्रकार का है। चलचर, स्थाल चर और खेर इरर र
तरह मास तीन प्रकार का है औ घी की तरह मकतन पर इरर र
चारों विगइ अभस है

विवेचन = मध (शहद) मदीरा और मक्खन मे उरर इरर
असख्य मस (ये इन्द्रीय) बीन पैदा होते है और खंस इरर र
मांस, रांधा हुवा मांस और रघाते (पकाते) हुवे मस मेरर र
मस धीव और बादर निगोद (साधारण वन्सरतीधन) इरर र
इस वास्ते यह चारों महा निगइ रोगादि के कारण मस इरर र
जिन्दा रहने कि इच्छा या घोडे स्वाद के वास्ते नरररर इरर र
बहुत समय तर लेना बुद्धिमान पुरुषों के लायक नही है।

पञ्चकरण के १४७ मणि

मण वयण काय मणवय वयतणु तिओगि

कर कारण मइ दुति जुइ, तिकालि सएल

मण = मन

वयण = वचन

काय = काया

मणवय = मन वचन

वयतणु = वचन, काया

तिओगि = तीन शोग

सगि = सातसे

सत्त = सातओ

कर = करना

कारण = कराना

अणुमइ = अनुमोदन

अर्थ

१ मन, २ वचन, ३ काया, ४ मन, वचन, काया
और ७ मन वचन, काया। इस प्रकार सातसे १ मन वचन काया
कराना

कीया
है

या कहा
ना)

ओ
४५ ॥

उ
प

१ अनुमोदन करना, ४ करना कराना, ५ करना अनुमोदना, ६ कराना अनुमोदना ७ करना, कराना, अनुमोदना । इस प्रकार $७ \times ७ = ४९$ भाग हुवे
इहे भूत भविष्य औ वर्तमान इनतिनो कालकी अपेक्षा गुण करन से १४७ भागे हुवे

विचेचन = भूत कालमें जो अनुचित आचरण हो गया हो उसकी निंदा और गृहा करता हु वर्तमान कालमें जो अनुचित आचार में कर रहा हु उनको रोक्ता हु और भविष्य में एसा आचरण नहीं करु इस तरह पञ्चम्याणमे भूतकाल कि निंदा वर्तमान का संवर और भविष्यका प्रत्यख्यान करता हु

अथेच उत्तकाले सयच मण वयण तणुहि पालणिय
जाणग जाणग पासित्ति मगच उगे तिसुअणुना ॥ ४३ ॥

| | | | | | | | |
|---------------|---------------------|---------------|-----------|-----------------------------|------------------------------------|----------------|---------------------|
| अथेच = इस तरह | उत्तकाले = कहे हुवे | समय के विप्रय | सय = स्वय | मणवयणतणुहि = मन, वचन कायासे | पालणिय = पालन करने लायक है | इत्ति = इसीतरह | मगचउगे = चार भागासे |
| | | | | | जाणग जाणग पास = जाण और अजाण के पास | | तिसु = तिन भागासे |
| | | | | | | | अणुना = अनुशा |

अर्थ

इस प्रकार कहे हुये कालमें अपन आर मनवचन और कायासे चञ्चकलाण पालन योग्य है । जाननेवाला और नही जाननेवाला के पास इस तरह चार भागो मे से तीन भागे अनुशा है ।

१ पञ्चम्याण = लेनेवाला भी समझ दार और देनेवाला भी जाणकार (समझनेवाला) = शुद्ध भागा

२ ,, लेनेवाला जाणकार और देनेवाला अजाण ,

३ ,, लेनेवाला अजाण और देनेवाला जाणकार ,

४ लेनेवाला अजाण और देनेवाला भी अजाण = अशुद्ध भागा

पञ्चस्त्राण की छ शुद्धि

फासिय, पालिय, सोहिय, तीरिय किटिय अराहिय छ शुद्ध
पञ्चस्त्राण फासिय विहिणो चिय कालिज पत्त ॥ ४४ ॥

| | | | | |
|------------------------------|--|----------------------------------|--|----------------------------|
| फासिय = स्पर्श कीया | | किटिय = कीत्य (प्रशशा किया) | | पञ्चस्त्राण = पञ्चस्त्राण |
| पालिय = पालन कीया | | अराहिय = आराधन | | फासिय = स्पर्श कीया |
| सोहिय = शोभाया (दीपाया) | | किया | | विहिण = विधि युक्त |
| तीरिय = तीर्यु | | छ शुद्ध = छ प्रकार से शुद्धि | | उचियकालि = उचित समय में |
| | | | | न = जो किया |
| | | | | पत्त = प्राप्त कीया |

अर्थ

१ स्पर्श किया २ पालन कीया, ३ दीपाया ४ तीर्यु ५ प्रशशा कीया
और ६ आराधन किया । इस तरह छ प्रकार से पञ्चस्त्राण कि शुद्धि है

विहिते उचित समय पर जो पञ्चस्त्राण लिया हो उसे स्पर्श कीया कहा
जाता है जैसे नक्कारती आदि मुर्षोदय से पेहला लना या धारणा करना)

पालिय पुणपुण सरिय सोहिय गुरुदत्त सेस भोयणओ
तिरिय समहियकालो किटिय भोयण समय सरणा ॥ ४५ ॥

| | | | | |
|------------------------|--|------------------------|--|-------------------------------|
| पालिय = पालन कीया | | सेस = बाकीसे | | समहियकालो = कुठ ज्यादा समय |
| पुणपुण = बारबार | | भोयणओ = भोजन करन से | | किटिय = प्रशशा किया |
| सरिय = याद कीया | | | | भोयण = भोजनका |
| सोहिय = दीपाया | | तिरिय = तीर्यु | | समय = समय |
| गुरुदत्त = गुरुको देकर | | | | सरणा = याद करने से |

अर्थ

किये हुवे (लिये हुवे) पञ्चक्वाण को धारंवार याद करना यह पालन कीया कहा जाता है, गुरु को देकर नाकी चो हो उस से भोजन करना दीयया कहलाता है विचार कीये हुवे समयसे कुछ व्याप्त समय तक संतोष रखकर पालन करने से तीर्यु (पारलगया) कहलाता है भोजन के समय पर (पञ्चक्वाण पुरा होने पर) याद करने से कीर्यु कर लाता है ।

दुसरी तरह से पञ्चक्वाण कि शुद्धि

इय पडिभरिभ आराहिय तु अहया छ सुद्धि सद्दहणा
जाणण विणयडणु भावण, अणु पालण भा ३ सुद्धित्ति ॥३६॥

| | | |
|-----------------|----------------------|-----------------------|
| इय = इस तरह | तु = पीर | अणुभावण = अनुभावण |
| पडिभरिभं = आचरण | अहया = अथवा | अणुपालण = अनुपालन |
| किया हुआ | छ शुद्धि = छ शुद्धि | भावशुद्धि = भावशुद्धि |
| आराहिय = आराधन | सद्दहणा = भक्षा | इत्ति = इसतरह |
| किया हुआ | जाणण = ज्ञान (जाणपण) | |

अर्थ

इस प्रकार कीया हुआ पञ्चक्वाण वो भी आराधन किया पञ्चक्वाण कहलाता है, या दुसरी तरह से भी छ शुद्धि है । १ भक्षार्थन से पञ्चक्वाण करना वो भक्षशुद्धि २ अवसरवन्मय का ज्ञान सहित पञ्चक्वाण बोशानशुद्धि, ३ गुरु को वदन करने रूप विनय कर के पञ्चक्वाण लेना वो विनय शुद्धि ४ गुरु पञ्चक्वाण देवे तब मन में मस्वर से पञ्चक्वाण स्वयं बोले वो अनुभावण शुद्धि ५ कष्ट पढ़ने पर भी लिया हुआ पञ्चक्वाण बराबर पालन करे वो अनुपालन शुद्धि, और ६ इस लोक कि और पर लोक कि कोई भी इच्छा न रखते हुवे राग, द्वेष, क्रोध, मानारूप्यादि रहित होकर (केवल कर्मभय वास्ते) पाले वो भाव शुद्धि इस तरह छ शुद्धि है ।

पञ्चकलाण से इस लोक में और परलोक में होनेवाले
फल पर दृष्टात

पञ्चकलाणस फलं इह परलोके यद्दोषदुर्विह तु
इहलोके घम्मिलाइ, दामन्न गमाइ परलोके ॥ ४७ ॥

| | | |
|---------------------|------------------------|--------------------|
| पञ्चकलाणस = पञ्चकला | दो = होता है | घम्मिलाइ = घम्मिल |
| फल = फल | दुर्विह = दो प्रकार से | कुमार आदि को |
| इह = यह लोक | तु = पीर | दामन्नगमाइ = दमनक |
| परलोके = परलोक | इहलोके = इहलोक में | आदि को |
| | | परलोके = परलोक में |

अर्थ

पञ्चकलाण का फल इस लोक और परलोक में इस तरह दो प्रकार से है
इस लोक में घम्मिल कुमार आदि को अच्छा फल मीना परलोक से दमन
कादिको अच्छा फल मीला

घम्मिल कुमार का दृष्टात

कुशाक्ष नगर में सुरेन्द्र दत्त और सुमन नाम का छोटी रहती थी उनको
घम आरधन करते बहुत वर्षों के बाद एक पुत्र कि प्राप्ति हुई। इससे उसका
नाम घम्मिल रक्खा। बड़ा होने पर घमराज और दुसरे कलाओं में
परिपूर्ण हुआ तब माता पिताने उसको घनयु देउ कि यशोमति कन्या के
साथ लग्न किया परन्तु बोड़े ही समय में घम्मिल कुमार का विद्व घर्म म
वशादा रहने लगा। और अपनी छोटी का मयाजल समझने लगा। इसकि खबर
माता पिता को होनेपर पर माताने उसको सुमारीयों के सुपत किया उनकि
संगति के परिणाम से वो चेश्यागामी हो गया, मातामी इनका चेश्याको घा
भेजने लगी आखीर एक दिन पुत्रको बुलाने की मशा तो नहीं आने से उसके
विषोग के कारण माता पिता का मृत्यु हो गया, घन समस्त होना
अपन पीयर चली गई घसंतसेना चेश्या न भी घम्मिल कुमार कि

आगली का छेदन करके उसे भगा दिया वहाँ से दुसरे गामन इसी गन्धि गाणों की रक्षा करनेवाले मालिकने पुत्र करने रत्ना। किसी दिन कण्ठ दूध चढ़ा आया और उसे पहिचान कर "पिय देना" एका वष देकर ठगछ अपने घर मेजा बहुत चलने से वो मका हुआ भेक देन मन्त्र के मन्त्र। वहाँ पर उसी सेठ कि विषा नाम की पुत्री आर और दामतक पर मोहीत होने से विष के बदले "विषा" कर दीया-दुग्धी लेकन व व देलकर विषा नाम कि कन्या का उसने साथ पाणी प्रश क्य दीन-दू मालुम हान पर शेठको बहुत दुःख हुआ फिर से दामतक को नानै क प्रजन मे स्वयं अपना पुत्र मारा गया इससे सेग्न "आउ कश्चो के वन मिथ्या नहीं होते" एसा विचार कर उसको घर का मनिह काट। वन गुरू पधारे मुनकर वो बदना करने गया वहाँ परे ठादेर मुनर पुत्र का मास का पञ्चकलाण याद आये जिससे सम्पन्न प्रपकर कर्न आन क देव लोक मे गया वहाँ से महाविदेह ने उजप्र होकर मज हवा

भाप मे किया हुआ पञ्चलाण का घृत्

पञ्चलाण मिण सेविउण भावेण विणरु रि
पत्ता अणत जीया सासय सुख वणायाइ ॥१॥

| | | |
|----------------------|-----------------------|--|
| पञ्चलाण = पञ्चलाण को | विणर = विनेश्वर | कल वच मन्त्र मन्त्र मुक्त - मन्त्र मन्त्र (मन्त्र) मन्त्र - का एव |
| इण = इस | उदिठ = उपदेश दीया हुआ | |
| सेविउण = सेवन करके | पत्ता = प्राप्त कीया | |
| भावेण = भावसे | | |

अर्थ

जिनश्वर महापुत्र का कहा हुआ इस पञ्चलाण के वने के वन से अनते बीर दुःखसे मुक्त शाश्वनामुख (मास) प्रकल्प



